Arts and Humanities UGC Care List Sr. No.-251
RNI : UTTMUL00029
ISSN : 2347-9892

शोधप्रज्ञा

अर्द्धवार्षिकी मूल्याङ्किता शोधपत्रिका
Biannaul Refereed Research Journal
UGC Approved

वर्ष सप्तमम् अङ्को द्वितीयः जनवरी-जून, २०२०

प्रधानसम्पादकः
प्रो० देवीप्रसादत्रिपाठी
कुलपतिः

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः
हरिद्वारम्, उत्तराखण्डम्

Arts and Humanities UGC Core List Sr. No.-251 ISSN : 2347-989

शोधप्रज्ञा

अर्द्धवार्षिकी मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

प्रधानसम्पादकः
प्रो. देवीप्रसादत्रिपाठी
कुलपतिः

परामर्शदातृसमितिः
प्रो. रमेशकुमारपाण्डेयः
आचार्यः बालकृष्णः
प्रो. रूपकिशोरशास्त्री
प्रो. ओमप्रकाशसिंहनेगी
प्रो. मोहनचन्द्रबलोदी

सम्पादकमण्डलम्
प्रो. दिनेशचन्द्रचमोला
डॉ. हरीशचन्द्रतिवाडी
डॉ. कामाख्याकुमारः
डॉ. रामरतनखण्डेलवालः
डॉ. रत्नलालः
डॉ. राकेशसिंहः
श्रीसुशीलकुमारचमोली

प्रबन्धसम्पादकः
श्रीगिरीशकुमारोऽवस्थी

शोधलेखमूल्यांकनसमितिः
प्रो. गणेशभारद्वाजः
प्रो. शिवशंकरमिश्रः
डॉ. शैलेशकुमारतिवारी
डॉ. सुमनप्रसादभट्टः

वित्तव्यवस्थापकः
श्रीमती हिमानीस्नेही

मूल्याङ्कनसंपादनप्रकाशनसमितिः
समन्वयकः
डॉ. अरुणकुमारमिश्रः

शोधाधिकारी
डॉ. महेशचन्द्रध्यानी

टङ्कणकर्त्ता
श्रीत्रिभुवनसिंहः

ISSN : 2347-989

अनुक्रमणिका

क्रम.सं.	विषय	नाम	पृष्ठ सं.
1.	छन्द:कौस्तुभस्य वैशिष्ट्यं छन्द:क्षेत्रे योगदानं च	डॉ. शैलेशकुमारतिवारी	1-3
2.	व्याकरणशास्त्रस्योपजीव्या:वेदा:	डॉ. दामोदरपरगांई	4-8
3.	पण्डितराजजगन्नाथस्य काव्यशास्त्रोभयविषयक योगदानम्	डॉ0 कंचनतिवारी	9-14
4.	स्वातन्त्र्यसाहित्यपर्यालोचनम्	डॉ. राजकुमारमिश्र:	15-19
5.	मुण्डकोपनिषदि ब्रह्मविषयकचिन्तनम्	डॉ. चिरंजीवी अधिकारी	20-26
6.	वेदपाठ-संरक्षणे शिक्षाग्रन्थानामनिवार्यत्वम्	डॉ अरुणकुमारमिश्र: मीनाक्षी	27-31
7.	श्रौतयागस्वरूपविमर्श:	अमितभार्गव:	32-35
8.	संस्कृतसाहित्ये मानवमूल्यदर्शनम्	राकेशकुमार:	36-39
9.	श्रीश्रीविवेकानन्दचरितम्' इत्यस्मिन चम्पूकाव्ये स्वामीविवेकानन्दस्य महदेवदानम्	डॉ. सुनीता वर्मन	40-43
10.	शाङ्करवेदान्ते ब्रह्मजीवसम्बन्धयोर्मध्ये वादत्रयस्यावधारणा	डॉ. कपिलगौतम:	44-47
11.	ब्राह्मणग्रन्थानुसारं स्वर्गलोक: एको विमर्श:	डॉ. प्रतापचन्द्रराय:	48-52
12.	उपनिषत्सुशृङ्गाररसविमर्श:	डॉ. व्रजेन्द्रकुमारसिंहदेव:	53-57
13.	धर्माचरणेन मानवकल्याणम्	डॉ. हनुमानमिश्र:	58-61
14.	माधुर्यगुणविमर्श:	कमलेशकुमार:	62-66
15.	भाषा की दशाएँ	डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी	67-70
16.	वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर कोविड-19 का प्रभाव	डॉ. सुमन प्रसाद भट्ट सुशील कुमार चमोली	71-75
17.	भारतीय दार्शनिक परम्परा में आत्मतत्त्व विमर्श	डॉ. वेदव्रत	76-80
18.	अनङ्गत्रयोदशी व्रत का आयुर्वेदिक व पर्यावरणीय महत्त्व	डॉ. ममता त्रिपाठी	81-90
19.	भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में हरिद्वार की हिन्दी पत्रकारिता का योगदान	डॉ. प्रविन्द्र कुमार	91-95
20.	संस्कृत साहित्य में व्याभिचारी भाव विवेचन	डॉ. सुजाता शाण्डिल्य	96-102

क्रम.सं.	विषय	नाम	पृष्ठ सं.
21.	प्राचीन भारत की संचार परंपराएँ एवं संचार व्यवस्था	डॉ. मनीषा शर्मा	103-107
22.	संस्कृत शिक्षा में वृत्ति की समस्याएं एवं सम्भावनाएं	सुधा	108-114
23.	संस्कृत भाषा का ध्वनि-विज्ञान पाणिनीय-शिक्षा सूत्र के संदर्भ में	डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार	115-122
24.	आधुनिक जीवन शैली में हठयोग की उपादेयता	सत्यानन्द डॉ. सुरेन्द्र कुमार	123-127
25.	ज्योतिष शास्त्र में आयु विचार	कमल डिमरी	128-134
26.	वैदिक समाज व्यवस्था एवं विश्वबन्धुत्व	डॉ. सुचित्रा भारती	135-139
27.	भारतीय अभिवादन परम्परा में 'नमस्ते' की व्यापकता का अध्ययन	डॉ. श्रुतिकान्त पाण्डेय	140-144
28.	कोविड-19 महामारी के कालखण्ड में प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की सार्थकता	डॉ. अजय परमार	145-149
29.	गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का वैशिष्ट्य	डॉ. चन्दन कुमार मिश्र	150-153
30.	गृहारम्भमुहूर्त-विमर्श	डॉ. देशबन्धु	154-161
31.	सट्टक-परंपरा में नायक विधान	वरुण मिश्र	162-171
32.	प्रयाग-कुम्भ : उत्पत्ति तथा इतिहास-एक विश्लेषण	डॉ. असीम श्रीवास्तव डॉ. मंजुश्री श्रीवास्तव	172-201
33.	योग का स्वरूप: पारम्परिक एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर	मयंक भारद्वाज	202-207
34.	अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता आज और कल	डॉ. प्रकाशचन्द्र पन्त	208-212
35.	महाकवि कालिदास प्रणीत रूपकों में वर्णित लोक-आस्था और लोकमान्यताएँ	मुकेश कुमार	213-215
36.	नालन्दा के अभिलेखीय साक्ष्यों का अवलोकन	डॉ. देवेन्द्र नाथ ओझा	216-220
37.	नादानुसन्धान विवेचन	डॉ. किरन वर्मा	221-226
38.	श्रौतयोग का स्वरूप एवं वैशिष्ट्य	डॉ. रंगनाथ त्रिपाठी	227-230

गृहारम्भमुहूर्त - विमर्श

डॉ० देशबन्धु
सहायकाचार्य
वास्तुशास्त्रविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठम्
नई दिल्ली-16

विश्व की आद्य ज्ञानराशि वेद है और वेदों में प्रतिपादित ज्ञान के सम्यक् अवगमन हेतु छः वेदाङ्गों की रचना हुई । इन छः वेदाङ्गों में से ही एक ज्योतिष वेदाङ्ग है जिसका विकसित स्वरूप हमें सिद्धान्त संहिता और होरा आदि तीन स्कन्धों में विभक्त दिखाई देता है । इस ज्योतिष शास्त्र के वेदाङ्गत्व का मुख्य हेतु कालज्ञान ही है । वेद मानव को यज्ञ-कर्म में प्रवृत्त करते है और यज्ञों का सम्पादन काल पर ही आश्रित है अर्थात् यज्ञों को सम्पादित करने का एक निश्चित समय है जिसको हम मुहूर्त भी कह सकते है और उस काल का ज्ञान ज्योतिष वेदाङ्ग से होता है अतः कालज्ञान अर्थात् मुहूर्त ही इस शास्त्र के वेदाङ्गत्व का मुख्य हेतु है यथोक्तम् -

"वेदास्तावत् यज्ञकर्मप्रवृत्ता:
यज्ञा: प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण ।
शास्त्रादस्मात् कालबोधो यतः स्याद्
वेदाङ्गत्वं ज्योतिषस्योक्तं तस्मात् ।।"[1]

यही मुहूर्त विचार ज्योतिषशास्त्र के संहिता स्कन्धान्तर्गत विविध मुहूर्त ग्रन्थों में अपने विकसित स्वरूप में दृष्टिगोचर होता है । वस्तुतः किसी भी कार्य की सफलता और असफलता में काल ही हेतु है ।इसका प्रमाण किसी एक निश्चित समय पर किये जाने वाले कार्यों का सफल होना तथा एक निश्चित समय पर किये जाने वाले कार्यों का असफल होना है । इस कालविशेष का वैज्ञानिक रीति से अध्ययन कर हमारे ऋषियों ने मुहूर्त ग्रन्थो का प्रणयन किया तथा उन ग्रन्थों में विविध कार्यों को सम्पादन करने के लिए विविध मुहूर्तों का निर्देश किया । मुहूर्तग्रन्थो में प्रतिपादित मुहूर्तों का ज्ञान कर मानव अपने जीवन में किए जाने वाले समस्त कार्यों को सम्पादित करने के लिए शुभ समय को जानने में सक्षम हो जाता है ।इन मुहूर्तों का विचार गृह के सम्बन्ध में भी किया गया है।गृह का निर्माण पार्थिव तत्वो से होता है,परन्तु उस गृह से सुख,समृद्धि और शान्ति की प्राप्ति हेतु जिन अपार्थिव तत्वो का विचार भारतीय आचार्यों ने किया,उनमें से मुहूर्त भी एक है। आचार्य भर्तृहरि ने कहा है कि किसी के पास तो अनेको घर है,परन्तु उन घरों में रहने वाला कोई नहीं है तथा किसी के पास एक ही घर है परन्तु उसमे अनेक लोग कष्ट से रहते है,इसका कारण काल ही है,यथोक्तम्-

यत्रानेके क्वचिदपि गृहे तत्र तिष्ठत्यथैको
यत्राप्येकस्तदनु बहवस्तत्र नैकोऽपि
इत्थं नेयौ रजनिदिवसौ दोलयन् द्वाविवाक्षौ
कालः कल्यां भुवनफलके क्रीडति प्राणिशारैः।[2]

गृह मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। गृह, स्त्री-पुत्रादि भोगों और सुख को प्रदान करने वाला है।धर्म ,अर्थ और काम को देने वाला है।प्राणियो को सुख प्रदान करने वाला आश्रय स्थल है। ग्रीष्मादि ऋतुओं से रक्षा करने वाला है । केवल गृहनिर्माण से ही वापी,देवमन्दिरादि के निर्माण का समस्त पुण्यफल प्राप्त हो जाता है ।अतः सर्वप्रथम गृहनिर्माण के लिए आदेश किया है । तद्यथा-

[1] सिद्धान्तशिरोमणि-कालमानाध्याय-श्लो सं -9
[2] वैराग्यशतक श्लो सं 42

ISSN 2454-1230

एकादशोऽङ्कः, XI[th] Issue

जनवरी–जून, 2020

January-June 2020

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति–समीक्षिता

बहुभाषी–षाण्मासिक–शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चांदकिरणसलुजा

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवन कुमारः

एकादशोऽङ्कः जनवरी-जून, 2020 ISSN : 2454-1230

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA- PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चाँदकिरणसलूजा

निदेशकः, संस्कृतसंवर्धनप्रतिष्ठानम्, नवदेहली

सम्पादकाः

डॉ. दिनेशकुमारयादवः डॉ. नितिनकुमारजैनः

डॉ. सुनील कुमार शर्मा डॉ. परमेश कुमार शर्मा

डॉ. आरती शर्मा

सहसम्पादकाः

डॉ.बि.वि.लक्ष्मीनारायण डॉ. रमणमिश्रः

श्रीमती प्रज्ञा सुश्री खुशबू कुमारी

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

शिक्षाशास्त्रविभागः,केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः एकलव्यपरिसरः, अगरतला

प्रकाशकः

संस्कृतसंस्कृतिविकाससंस्थानम्

बाड़ी, धौलपुरम्, राजस्थानम् – 328021

- विधिपरामर्शकः
  श्री विनोदजिन्दलः (अधिवक्ता, तहसीलन्यायालयः, बाड़ी, धौलपुरम्, राजस्थानम्)
- विधिसहपरामर्शकः
  श्री अरुणकुमारमंगल(एडवोकेट)
- **प्रबन्धसहसम्पादकः**
  श्री गुन्जनपाठकः
- शिक्षाप्रियदर्शिनी
- **ISSN : 2454-1230**
- एकादशोऽङ्कः– **जनवरी- जून, 2020**

- **© सर्वाधिकाराः प्रकाशकस्य अधीनाः ।**

- **प्रकाशकः**
  संस्कृतसंस्कृतिविकाससंस्थानम्,
  लक्ष्मी विद्यालय के पास भारद्वाज मार्केट,
  बाड़ी, जनपद -धौलपुरम्, राजस्थानम् - 328021
- **संस्थानस्य जालपुटम्-** www.ssvsanthan.in
- **पत्रिकायाः जालपुटम् (website)-www.shikshapriyadarshini.com**
- **सम्पर्कसूत्रम् -** + 91-8905479855, 9555069295,9529208751,08619590069
- **अणु-सङ्केतः-** shikshapriyadarshini777@gmail.com,shikshapatrika@gmail.com
- **सहयोगराशिः** लेखकाय तल्लेखान्वितोऽङ्कः निःशुल्कं प्रदास्यते ।
- **इयं पत्रिका उभयथा अध्येतुं शक्यते Online &Offline**
  संस्थागतसदस्यताशुल्कम् - प्रत्यङ्कम् ६००रू, वार्षिकम् १२०० रू., द्विवार्षिकम् २२०० रू.,
  चतुःवार्षिकम् ४२०० रू, पञ्चवार्षिकम् ५००० रू. ।
- **A/C Name : Sanskrit sanskriti vikas sansthan ,Bari**
- **A/C No: 45640200000541 , IFSC CODE: BARBOBADIXX**
- **मुद्रणम्** -MODERNXEROX,133/3,KATWARIYA SARAI, PHASE -2, NEW DELHI -110016

सूचना: –

- पत्रिकायाः समस्तपदाधिकारिणः अवैतनिकाः सन्ति ।
- लेखस्य / शोधपत्रस्य समस्त उत्तरदायित्वं लेखकस्यैव अस्ति ।
- कस्यापि विवादस्य न्यायिकक्षेत्रं तहसीलबाड़ी-धौलपुरम् (राजस्थानम्) भविष्यति ।

मुख्यसंरक्षकाः

प्रो. पी. एन्. शास्त्री (कुलपतिः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली)

प्रो. के. रविशङ्करमेनोन् (पूर्वशिक्षासङ्कायप्रमुखः, कुलसचिवचरश्च, रा.सं.वि. तिरुपतिः)

प्रो. ए. पी. सच्चिदानन्दः (कुलपतिचरः , शिक्षाशास्त्रविगाध्यक्षश्च, रा.सं.संस्थानम्, नवदेहली)

प्रो. श्रीनिवासवरखेडी (कुलपतिः, संस्कृतविश्वविद्यालयः, रामटेक, नागपुरम्, महाराष्ट्रः)

संरक्षकाः

प्रो. लक्ष्मीनिवासपाण्डेयः (निदेशकः ,केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वेदव्यासपरिसरः, हि.प्र.)

प्रो. सुकान्तसेनापतिः (निदेशकः ,मुक्तस्वाध्यायपीठ, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः , नवदेहली)

श्री घनश्यामदास बंसल "एडवोकेट" (पूर्व वाइस चैयरमैन एवं वर्तमान सदस्य, राजस्थान बार काउन्सिल ऑफ जौधपुर)

संस्कृतभाषा-सम्पादकमण्डल

डॉ.इक्कुर्ति वेङ्कटेश्वर्लु(सहायकाचार्यः ,श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नईदिल्ली)

डॉ. मनीषजुगरानः (सहायकाचार्यः, शिक्षाशास्त्रविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, बल्हारपरिसरः(हि.प्र.)

डॉ. डम्बरूधर पति (सहायकाचार्यः, शिक्षाविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः,(म.प्र.)

डॉ.बि.वि.लक्ष्मीनारायण(सहायकाचार्यः, शिक्षाशास्त्रविभागः के.सं.विश्वविद्यालयः एकलव्यपरिसरःअगरतला)

डॉ. बि कामाक्षम्मा (सहायकाचार्या, साहित्य विभागः श्री ल. ब.श.रा. सं. वि. नवदेहली)

डॉ. सौरभ दुबे (सहायकाचार्यः, साहित्य विभागः श्री ल. ब.श.रा. सं वि. नवदेहली)

डॉ. हिमान्शु शेखर त्रिपाठी (सहायकाचार्यः, धर्मशास्त्रविभागः श्री ल. ब.श.रा. सं वि. नवदेहली)

हिन्दीभाषा-सम्पादकमण्डलम्

डॉ कृष्णकान्त तिवारी (सहायकाचार्यः, शिक्षाविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः, (म.प्र.)

डॉ. दाताराम पाठक (सहायकाचार्यः, शिक्षाविभागः केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः (म.प्र.)

डॉ. कालिका प्रसाद शुक्ल (सहायकाचार्यः, शिक्षाविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः (म.प्र.)

डॉ.रमण मिश्रः(सहायकाचार्यः, शिक्षाविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः (म.प्र.)

आङ्ग्लभाषासम्पादकमण्डलम्

प्रो. पवनकुमार: (शिक्षाशास्त्रविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः (म.प्र.)

डॉ.नितिनजैनः (सहायकाचार्यः, शिक्षाविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः,(म.प्र.)

डॉ. आरती शर्मा (सहायकाचार्या, शिक्षाशास्त्रविभागः श्री ल. ब.श.रा. सं वि. नवदेहली)

डॉ. छगनलाल शर्मा (सहायकाचार्यः,राजाबलवन्तसिंह महाविद्यालयः, आगरा, उ.प्र)

समीक्षकसमितिः

प्रो. प्रभादेवी (भूतपूर्व शिक्षाशास्त्रविभागाध्यक्षा, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, भोपालपरिसरः, भोपालम्)

प्रो. महानन्दझा (आचार्यः, न्यायदर्शनसङ्कायः, श्रीला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठम्, नवदेहली)

डॉ. राधागोविन्द त्रिपाठी, सहायकचार्यः ,शिक्षाविभागः राष्ट्रियसस्कृतविश्वविद्यालयः ,तिरुपतिः आ. प्र.)

प्रो. सोमनाथसाहु (विभागाध्यक्षःशिक्षाशास्त्रविभागः , केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, बल्हारपरिसरः(म.प्र.)

प्रो. अशोक कछवाह् (आचार्यः, शिक्षाविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, गुरुवाय्यूरपरिसरः(केरलम्)

प्रो. आर. गायत्री मुरलीकृष्ण (केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली)

डॉ. अनिलानन्दः (सहायकचार्यः , वेदान्तविभागः, श्रीरंगलक्ष्मी-आ.सं.महा. वृन्दावनम्, मथुरा)

डॉ. सुषमा चौधरी(सहायकाचार्या,संस्कृतविभागःकमलानेहरुमहाविद्यालय दिल्लीविश्वविश्वविद्यालयस्यअधीनस्थ, दिल्ली)

परामर्शदात्रीसमितिः

प्रो. एम्. चन्द्रशेखर: (आचार्यः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, लखनऊपरिसरः,लखनऊ)

प्रो. ई. एम्. राजन् (निदेशकः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः गुरुवाय्युरपरिसर, केरलम्)

प्रो. सुबोध शर्मा (व्याकरणविभागाध्यक्षः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः भोपालपरिसरः, भोपालम्)

प्रो. भारतभूषणमिश्रः (ज्योतिषविभागाध्यक्षः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः क. जे. सोमैयासंस्कृतविद्यापीठम्, मुम्बई)

प्रो. एम्. जयकृष्णन् (शिक्षाशास्त्रविभागः, श्रीला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालयः, नवदेहली)

डॉ. श्रीगोविन्दपाण्डेयः (सहाचार्यः, शिक्षाविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः (म.प्र.)

डॉ. नगेन्द्र नाथ झा (सहाचार्यः, शिक्षाशास्त्रविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः(म.प्र.)

अनुक्रमणिका

क्र.	लेखक	पत्रम्	पृ.
1.	Prof. R. Deepta	From Conventional to Radical – the Roles of Some Women Characters in the Mahābhārata	1
2.	डॉ. कैलाशचन्दमीणा डॉ. जगदीशकुमारजाटः	पुराणेषु शिक्षा भक्तिमार्गस्य वैशिष्ट्याधानाय आख्यायिकायाः स्थानं कथं वर्तते?	8
3.	डा. देशबन्धुः जगदीशकुमारः	वास्तुशास्त्रपरम्परायां प्राचीनाऽर्वाचीनमतानुसारं मृत्तिकापरीक्षणम्	16
4.	डा.वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल	प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' में सामाजिक यथार्थ	25
5.	डा. आरती शर्मा	संज्ञानात्मकमनोविज्ञानस्य विधयः	29
6.	डा. सुरेश शर्मा	विवाह मेलापक में नाडी दोष विचार	33
7.	डा. सुनील कुमार शर्मा	हिन्दी शिक्षण में अनुवाद का स्वरूप एवं महत्त्व	37
8.	डॉ. सुषमा चौधरी	संस्कृत एवं अवधी का अंतः संबंध- रामचरितमानस के परिप्रेक्ष्य में	40
9.	डा. अजय कुमार	कोरोना काल में बदलते जीवन मूल्य और भारत की भूमिका	44
10.	डा. नितिनकुमारजैनः रेनू	परास्मृतिः, तत्सम्बद्धानां शोधकार्याणां पराविश्लेषणञ्च	51
11.	डा. भारती कौशल	शिक्षकों में व्यावसायिक विकास के लिए सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी की भूमिका	56
12.	डॉ अखिलेश कुमार त्रिपाठी	श्रीमद्भागवद्गीता में निहित ज्ञान योग का शैक्षिक विश्लेषण	63
13.	स्वाती लोडे	पाणिनीयव्याकरणे नियमसूत्रविमर्शणम्	67
14.	खुशबू कुमारी	स्फोटतत्त्वविमर्शः	71
15.	गुंजन पाठक	भारतीयपरिप्रेक्ष्य में प्रतिभा एवं क्षमता	74
16.	वेणुधरदाशः	वैदिकवाङ्मये कृषिविज्ञानम्	78
17.	अभय तिवारी	भारतीय परिप्रेक्ष्य में आध्यात्मिकबुद्धि तथा शिक्षा	83
18.	अभिनवशर्मा	लकारार्थविमर्शः	86
19.	सुशील कुमार	सेवापूर्व अध्यापक की जीवन शैली एवं शैक्षिक	89

3.

वास्तुशास्त्रपरम्परायां प्राचीनाऽर्वाचीनमतानुसारं मृत्तिकापरीक्षणम्

डा. देशबन्धुः
सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः
जगदीशकुमारः
शोधच्छात्रः, वास्तुशास्त्रविभागः
श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालयः, नई दिल्ली-16

शोधसारांशः

आधुनिकयुगे नैके अभियान्त्रिकवर्गाः भवनादिनिर्माणेप्रयुज्यमानानां नैकेषां यन्त्राणां निर्माणे अहर्निशं कार्यरतास्सन्ति। ते केवलं मानवस्य भौतिकसुखं सर्वोपरि मत्वा भवनादिनिर्माणं कुर्वन्ति, परञ्च दर्शनशास्त्रे दुःखत्रयाणां शमनविषये प्रोक्तम् । आधिदैविक-आधिभौतिक-आध्यात्मिकश्चैतानि त्रीणि दुःखानि सन्ति । यावत् पर्यन्तमेतेषां दुःखत्रयाणां सम्पूर्णरूपेण विनाशो न भवेत् तावत्पर्यन्तं मानवाः कदापि सुखं न अवाप्स्यन्ति। वास्तुशास्त्रे दुःखत्रयाणां विनाशाय सर्वविधसुखानाञ्च प्राप्तयेचिन्तनं कृतम् । वास्तुशास्त्रस्य प्रमुखसिद्धान्तेषु भूमिचयनसिद्धान्तोऽप्येकः प्रमुखः सिद्धान्तो वर्तते। वर्तमानकाले भूमिचयनस्य प्रचलितयन्त्राणां प्रयोगविधयः श्रमसाध्याः व्ययसाध्याः क्लिष्टकराश्च सन्ति । अतः सामान्याः जनाः तेषामुपयोगेऽसमर्थतामनुभवन्ति । भौतिकसुखावाप्तये एतेषां यन्त्राणां प्रयोगं कृत्वाऽपि धनिकाः आधिदैविक-आध्यात्मिकदुःखाभ्यां पीडिताः दृश्यन्ते ।द्वितीये पक्षे वास्तुशास्त्रस्य विविधेषु ग्रन्थेष्वपि भूमेः वर्ण-गन्ध-रस-आकृति-प्लवादिनां विचारं कृत्वा शुभाशुभत्वं निर्धार्यते ।प्रयोगेऽस्मिन् मानवस्य केवलं पञ्चेन्द्रियाणामावश्यकता भवति । यथाचक्षुरिन्द्रियमाध्यमेन निवासयोग्यभूमेः आकृति-वर्णप्लवविचाराश्च घ्राणेन्द्रियेनभूमेः गन्धविचारः जिह्वया भूमेः रसविचारः श्रोत्रेण शब्दविचारः त्वगेन्द्रियेण स्पर्शविचारःक्रियते।

प्रास्ताविकम्

भारतीयसंस्कृतौ विश्वहितस्य चिन्तनमेव सर्वप्रथमं कृतम् । दुर्लभतरा संस्कृतिरियमखिलब्रह्माण्डे प्रसरेत् इति मनसि निधाय महर्षिवेदव्यासेन वेदानां सङ्कलनं कृतं यतो हि पृथिव्यां वेदा एव समस्तज्ञाननिधेराकराः । विद् धातोः घञ् प्रत्यये सति "वेद" शब्दोऽयं निष्पद्यते ।स्वतः प्रमाणस्वरूपाः वेदाः न केनापि प्राणिना रचिताः । ऋग्यजुस्सामथर्वाख्याः वेदाश्चत्वारः । तेष्वपि अथर्ववेदस्योपवेदे स्थापत्यवेदे वास्तुविद्यायाः वर्णनमुपलभ्यते ।अस्योपवेदस्यापरं पर्यायस्वरूपं शिल्पशास्त्रमिति नाम्ना लोके विख्यातमस्ति । भारतीयवास्तुशास्त्रस्य सिद्धान्तेषु सर्वप्रथमं भूमिचयनस्योल्लेखः प्राप्यते । इत्यस्मादारभ्य गृहप्रवेशपर्यन्तं समस्तकार्याणां सम्पादनं नियमबद्धरूपेण क्रियते। भवन-देवालय-ग्रामित्यादिषु पञ्चमहाभूतानां प्राकृतिकशक्तिनाञ्च सामञ्जस्य कथं भवेत् ? इत्यस्य विमर्शःशास्त्रेऽस्मिन् विशिष्टतया क्रियते। वास्तुशास्त्रानुसारं भवनस्यमूलाधारो भूमिरस्ति अतः भूमेः प्राधान्यं सर्वाधिकं वर्तते। अनेनेव कारणेन गृह-पुर-प्रासाद-दुर्गेत्यादीनां निर्माणात् पूर्वं भूमेर्चयनं सर्वादौ क्रियते । यतो हि भूमिरेवेतेषामाश्रयस्थली वर्तते। भवननिर्माणात् पूर्वं भूमेः परीक्षणस्य कश्चित् विधिः वास्तुग्रन्थेषु वर्णितः। उक्तञ्च-

"पूर्वं भूमिं परीक्षेत् पश्चाद् वास्तुं समारभेत् ॥"

अर्वाचीनमतानुसारंमृत्तिकापरीक्षणम्-

सर्वे प्राणिनः पञ्चतत्त्वैर्निर्मितास्सन्ति । पृथ्विजलतेजवाय्वाकाशादिषु सर्वेषां स्वकीयं महत्त्वं वर्तते । एतेषां महाभूतानां प्रयोगः प्रत्येकं भवने भवति । पञ्चमहाभूतेषु भूमिरप्येको भूतः। इयम् भूमिरेव कस्यापि भवनस्य आधारभूता । अतः कस्यापि भवनस्य सुदीर्घकालं यावत् स्थिरतायै भूमेः सुदृढता आवश्यकी वर्तते । भूमेः घनत्वादिज्ञानाय प्राचीनकालतः अद्यावधिं यावत् विविधैः माध्यमैः परीक्षणं क्रियते । प्रप्रथमर्वाचीनमतानुसारं मृत्तिकापरीक्षणस्य विविधानां विधीनां चर्चा क्रियते । यथा जलस्य शुद्धतायाःआधारः" पी०एच" इतिमानं भवति, अनेनेव ज्ञायते यत् जलं पातुं योग्यमस्ति न वा, तथैव भूमेरुर्वराशक्तिविषयेज्ञातुं

RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

UGC Care Listed

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

नवम वर्ष, चतुर्थ अंक

सितम्बर-अक्टूबर 2020

Bharatiya Jyotisham
पर्यैति भारतम् लोकान्
भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	वेद के अर्थावबोध में वेदाङ्गज्योतिष की भूमिका	डॉ. देशबन्धु	02
2.	ज्योतिष का प्राचीन इतिहास एवं ब्रह्मगुप्त विमर्श	राघवेन्द्र त्रिवेदी	05
3.	भूगोल एवं पर्यावरण के आलोक में भारतीय वास्तुशास्त्र	डॉ शुभम् शर्मा	09
4.	प्रतिमा-प्रमाण, तालमान एवं रूपविधान	डॉ.आशीष कुमार चौधरी	12
5.	वैदिक साहित्य में ज्योतिष का स्वरूप : एक परिचय	डॉ. सुरेश कुमार बैरागी	16
6.	पातञ्जल-योगदर्शन-प्रथमपाद में वर्णित चित्त को समाहित करने के उपाय : एक अवलोकन	दीपक बन्देवार	21
7.	प्राचीन काव्य कविताओं से संस्कृत वाङ्मय की अनन्यता	डॉ. कृष्ण चन्द्र पण्डा	25
8.	पूर्वमीमांसा दर्शन के उद्भव एवं विकास में 'मिथिला' का योगदान	ओम प्रकाश झा	28
9.	संस्कृत-सुभाषित साहित्य में भाग्य की अवधारणा	मुरली धर पालीवाल	32
10.	पोस्ट लॉकडाउन क्लासरूम प्रबंधन की चुनौतियां और समाधान	एस. अकिला, रेणु दास	37
11.	भवभूति एवं उनका उत्तररामचरितम् संक्षिप्त परिचय	डॉ. जया प्रियदर्शिनी	42
12.	स्वातन्त्र्य-अधिकार की वैदिक अवधारणा	मानसी	44
13.	द्वासुपर्णा की समीक्षा	रूपा कुमारी	50
14.	सप्तसिन्धु के भौगोलिक सन्दर्भ	पवन	57
15.	'श्रीगुरुमहाराजचरितम्' महाकाव्य की साम्प्रत काल में उपादेयता	मीनाक्षि कुमारी आर्या	62
16.	संस्कृत वाङ्मय में निहित मानवीय मूल्य 'यम' और 'नियम' के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. अच्छेलाल	65
17.	गाँधी जी के आत्मनिर्भरता संबंधी विचार : आधुनिक भारत के लिए सरोकार	डॉ. संजय कुमार	68
18.	महाकाव्यकालीन ग्रन्थों का परिचय: एक समीक्षात्मक अध्ययन	वेदानन्द	72
19.	मधुपक अनुदित काव्य दुर्गासप्तशती मैथलीसुधा	किरण मिश्रा	74
20.	श्रीहनुमच्चरित्रवाटिका महाकाव्य में छन्दविवेचन	दयाशंकर शर्मा	76
21.	तनाव-प्रबंधन एवं योग	डॉ साधना दौनेरिया	78
22.	समकालीन हिन्दी साहित्य और स्त्री विमर्श के कुछ अनुत्तरित प्रश्न	आशुतोष शुक्ल	81
23.	न्यायदर्शन में प्रत्यक्ष प्रमाण की अवधारणा	डॉ. कृष्ण मुरारी मणि त्रिपाठी	83
24.	20 वीं सदी के उतरार्द्ध में महिलाओं की समाजिक एवं राजनीतिक स्थिति	सुनिता कुमारी	87

पुनरीक्षण समिति

प्रो. विद्यानन्द झा
पूर्वप्राचार्य - केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
भोपाल परिसर, भोपाल

प्रो. क्षेत्रवासी पण्डा
अध्यक्ष - तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. भारतभूषण मिश्र
निदेशक - केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
क.जे.सौमेया विद्यापीठ, मुम्बई

प्रो. हंसधर झा
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर

डॉ. सनन्दन कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष - साहित्यविभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर

डॉ. अशोक थपलियाल
अध्यक्ष - वास्तुविभाग
श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत वि.वि., नई दिल्ली

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414
UGC Care Listed

Bi - Monthly
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका-संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

डॉ. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्

कार्यकारी सम्पादक

अविनाश उपाध्याय

सम्पादक

रोहित पचौरी

डॉ. भूपेन्द्र कुमार पाण्डेय

ज्ञान सहयोग

पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रष्ट चैन्नै

प्रकाशक

भारतीय ज्योतिषम्

एल - 108, संत आशाराम नगर,
फेज - 3, लहारपुर,
भोपाल - 462043, मध्यप्रदेश

Web - www.bharatiyajyotisham.com
E.mail : bharatiyajyotisham@gmail.com
Mob : 9752529724, 9039804102

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by Smt P V N B Srilakshmi on behalf of **Bharatiya jyotisham**
L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3,
Laharpur, Bhopal - 462043
Editor - ROHIT PACHORI*

सम्पादकीय

हम मनुष्य वर्तमान की प्राप्ति और हानि के वशीभूत अपने पूर्व कृत आचरणों के मंथन से दूर भविष्य के परिणाम से अनजान हो जाते हैं। हम भूल जाते हैं कि वर्तमान परिदृश्य हमारे अतीत के कर्मों का, अपने दायित्वों के प्रति दिखाई गई उदासीनता का प्रतिफल है। हमें तो केवल आज और पूरे आज का भी नहीं अपितु अभी का दृष्टिगोचर हो रहा है। कई बार स्वतः चिन्तन मस्तिष्क में उभरता है कि हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों ने कैसे लाखों वर्षों के आगे के परिणामों को समझ लिया था जिनकी संताने अपने तुच्छ स्वार्थों में ही उलझी हुई हैं। जिन्हें समाज व देश का तो दूर वे तो केवल अपने निजी स्वार्थ में अंधे हैं।

हमें आपकों, हाँ आपको भी सभी को पुनः अपने अस्तित्व की तरफ देखना होगा, रुकिये ऐसा मत सोचिए कि भला मेरे अकेले चिन्तन से क्या होगा ? आपका चिन्तन आपके आसपास को भी प्रभावित करेगा, इसलिए तैयार रहिए। हम सभी सजग हों सावधान हों, अपने अस्तित्व को बचाने के लिए सामर्थ्यवान् बने उस विरासत को समृद्धि देने के लिए यकीन मानिये बहुत जरुरी है और अभी ही जरुरी है। हम अपने ज्ञान-विज्ञान को आध्यात्म के दृष्टिकोण से स्वयं को उसके अनुरूप ढालें। हमारा इतिहास परिदृश्य बदनले का इतिहास है नवप्रभात के लिये समृद्ध संस्कार के लिए, धर्म की स्थापना के लिए कठिन से कठिन संघर्ष करने का और हम पुनः उस विचार को स्वीकार करें, अपने साथ अन्य को भी प्ररित करें, शिक्षित करें, अपने अनुभवों को बतायें, जागृत करें, यही तो उद्देश्य है शिक्षा का। उत्तिष्ठ जाग्रतः प्राप्य वरान्निबोधत। हमारी शिक्षा और हमारा शिक्षित होना, हमें देश व समाज के योग्य बनाता है। शिक्षा ही हमें संस्कार प्रदान करती है। उसी संस्कार से संस्कृत होकर हम सभ्य समाज के लिए आदर्श बनते हैं। आदर्शवान् व्यक्ति ही समाज व देश की प्रतिष्ठा की धुरी बनता है। हम सभी सुशिक्षित होकर देश को आगे बढ़ाये इसी उद्देश्य को सार्थक करने के लिए ज्योतिर्वेद प्रस्थानम् सतत् प्रयासरत है। हमारी अमूल्य धरोहर आप सभी के सामने समयानुसार उपस्थित होती रहती है। उसी क्रम में यह अंक आपके हाथों में प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है।

पत्रिका से सम्बन्धित सभी पद अवैतनिक है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से प्रकाशक को सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का समाधान भोपाल न्यायालय से ही स्वीकार्य है। शोधलेख आमन्त्रित है। पूर्वप्रकाशित लेख अनुमत नहीं है। लेख से सम्बन्धित विवादों का दायित्व लेखक का ही होगा। लेख को स्वीकार व अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार प्रकाशक को है।

ISSN 2278 - 0327

वेद के अर्थावबोध में वेदाङ्ग ज्योतिष की भूमिका

डॉ. देशबन्धु
सहायकाचार्य, वास्तुशास्त्रविभाग
श्री ला.ब.शा.रा.सं.वि.वि.नई दिल्ली

वेद शब्द ज्ञान का पर्याय है जो इसके मूल धातु विद् से ज्ञात होता है। वेद ज्ञान-विज्ञान के आद्य स्रोत है, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान देने वाले है शुभाशुभ के विषय में निर्देश करने वाले हैं, विश्वकल्याण के उपदेशक है। यज्ञविज्ञान, ज्योतिषविज्ञान, सृष्टिविज्ञान, प्राणिविज्ञान, मनोविज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, गणित तथा कृषि-विज्ञान आदि का मूल वेदों में ही प्राप्त होता है। इन समस्त विज्ञानों के वास्तविक स्वरूप के ज्ञान हेतु वेदों का अध्ययन अनिवार्य है, परन्तु वेदों की भाषा अत्यन्त दु:रूह है अत: वेद के मन्त्रार्थों के बोध हेतु वेदाङ्ग, उपनिषद्, आरण्यक, ब्राह्मणादि ग्रन्थों का प्रणयन किया गया। यह सम्पूर्ण वैदिक साहित्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि ये वेदपुरुष के शरीर के विविध अङ्गों में विन्यस्त है। यथोक्तम् -

छन्द: पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते,
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।[1]

छन्द वेदाङ्ग वेद पुरुष के पैर है, कल्प वेदपुरुष के हाथ हैं, ज्योतिष वेदपुरुष के नेत्र हैं, निरुक्त वेदपुरुष के कान हैं, शिक्षा वेदपुरुष की नासिका है तथा व्याकरण वेदपुरुष का मुख है। वेदों के सम्यक् ज्ञान हेतु इन वेदाङ्गों का अध्ययन अनिवार्य है। इन सभी वेदाङ्गों का वेदार्थ बोध में अपना-अपना महत्त्व है, बिना इन वेदाङ्गों का अध्ययन किए बिना वेदार्थ का बोध होना असम्भव है, इन वेदाङ्गों के ज्ञान से ही वेदार्थ प्रकाशित होता है। यथोक्तम् -

वेदाङ्गविज्ञाने हि वेदार्थ प्रकाशते:।।[2]

महर्षि पतञ्जलि ने भी वेदाङ्गों के महत्त्व को द्योतित करते हुए वेदों का अध्ययन वेदाङ्गों के सहित करने का उपदेश किया है। यथोक्तम् -

ब्राह्मणेन निष्कारणों धर्म: षडङ्गो वेदध्ययो ज्ञेयश्चेति।[3]

इन षड्वेदाङ्गों में से एक वेदाङ्ग ज्योतिष वेदाङ्ग है, जो वेदपुरुष का नेत्र माना जाता है, इस वेदाङ्ग का महत्त्व द्योतित करते हुए आचार्य लगध ने कहा है-

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद् वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्ध्नि संस्थितम्।।[4]

इस प्रकार से ज्योतिष को वेदाङ्गों में शिखर स्थान प्राप्त है। यद्यपि इस ज्योतिष वेदाङ्ग का मुख्य उद्देश्य शुभ समय का ज्ञान करना ही था, तथापि अपने विकसित स्वरूप को प्राप्त करते हुए आज यह मानव मात्र के लिए बहुविध रूप से उपकारक है, परन्तु इस वेदाङ्ग का मूल सम्बन्ध काल ज्ञान से होने के कारण इसको अद्यावधि कालविधान शास्त्र ही कहा जाता है। तद्यथा-

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ता
कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञा:।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं
यो ज्यौतिषं वेद स वेद यज्ञान्।।[5]

यद्यपि इस कालविधान शास्त्र का मुख्य लक्ष्य वैदिक यज्ञों के सम्पादन के लिए उपयुक्त काल का निर्धारण करना था, परन्तु वेदों में मन्त्ररूप में स्थित ज्ञान के सम्यक् अवबोध हेतु इस ज्योतिष वेदाङ्ग का अत्यन्त महत्त्व है। वेदों के अनेक दु:रूह मनत्रों का सम्यक् बोध इस वेदाङ्ग की सहायता के बिना सम्भव ही नहीं है। वेदमन्त्रों वेद मन्त्रों के कुछ पदों का अर्थ तो बिना ज्योतिष के अध्ययन के ज्ञात हो ही नहीं सकता। उदाहरणार्थ प्रसिद्ध मन्त्र है-

पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्वमेवावशिष्यते।।[6]

इस मन्त्र के वास्तविक अर्थ का ज्ञान उसी को हो सकता है जो शून्य को जानेगा तथा शून्य के वास्तविक स्वरूप को वही जानेगा जो ज्योतिष का अध्येता होगा। अन्यथा इस मन्त्र के अर्थ का सम्यक् बोध असम्भव ही है क्योंकि संख्या या गणना का सीधा सम्बन्ध ज्योतिष वेदाङ्ग से ही है। केवल शून्य ही नहीं, अपितु एक [7], दो [8], तीन [9], चार [10], पाँच [11], छ:[12], सात [13], आठ और नौ [14] का उल्लेख भी वेदों में कई मन्त्रों में हुआ है तथा उन संख्याओं को जानने हेतु केवल ज्योतिष वेदाङ्ग ही एक शरण है। बिना ज्योतिष वेदाङ्ग के संख्या का ज्ञान असम्भव है और बिना संख्या को जाने इन मन्त्रों का अर्थावबोध भी असम्भव है।

ॐ

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला – त्रयोदश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

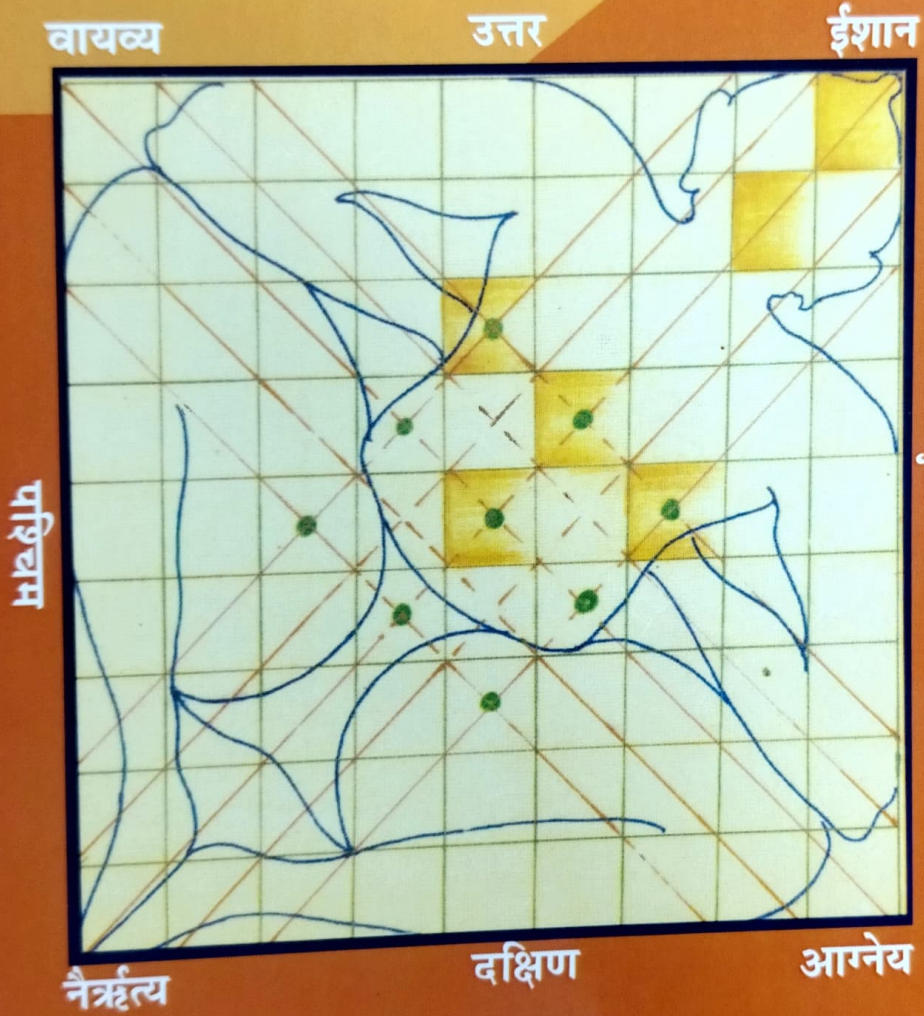

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-110016

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-त्रयोदश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

विषयानुक्रमणिका

1. वास्तुशास्त्रानुसारेण गृहसज्जा — **डॉ. अशोकथपलियाल:**, 1–7
सहाचार्य: वास्तुशास्त्रविभाग:
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:
नवदेहली-१६

पंकज सेमल्टी
शोधच्छात्र: वास्तुशास्त्रविभाग:
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:
नवदेहली-१६

2. वास्तुशास्त्रदृष्ट्या बहुतलीयावासीयभवनेषु शालविधानविमर्श: — **डॉ. देशबन्धु:** 8–18
सहायकाचार्य:, वास्तुशास्त्रविभाग:
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:
नवदेहली-१६

विनयकुकरेती
शोधच्छात्र: वास्तुशास्त्रविभाग:
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:
नवदेहली-१६

3. व्याकरणशास्त्रदृष्ट्या वास्तुशब्दावलिविचार: — **डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी** 19–25
सहायकाचार्य: व्याकरणविभाग:
महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालय:
उज्जयिनी, म.प्र.

4. राजवल्लभवास्तुशास्त्रानुसारेण गृहारम्भे मासविचार: — **डॉ. प्रवेशव्यास:** 26–30
सहायकाचार्य: वास्तुशास्त्रविभाग:
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:
नवदेहली-१६

आचार्य अमितजोशी
शोधच्छात्र: वास्तुशास्त्रविभाग:
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:
नवदेहली-१६

वास्तुशास्त्रदृष्ट्या बहुतलीयावासीयभवनेषु शालविधानविमर्शः

डॉ. देशबन्धुः
विनयकुकरेती

वास्तुशास्त्रं भारतीयसंस्कृतेः समृद्धतमायाः परम्परायाः दर्पणं वर्तते । शास्त्रेऽस्मिन् तात्कालिकजीवनशैल्याः विस्तारो विभिन्नानां धार्मिकलौकिकानाञ्च परम्पराणामुत्कृष्टप्रयोगः समाजोपयोगिनीनां विभिन्नानां कलानाञ्च समावेशो दृश्यते । वास्तुशास्त्रस्योद्भवो वैदिककाल एव जातः। ऋग्वेदस्य विभिन्नासु ऋचासु पौनःपुन्येन वास्तुदेवता प्रार्थ्यते यत् सोऽस्मान् रक्षेदिति। भारतीयचिन्तनस्यादिस्रोतत्वेन वेदा एव मन्यन्ते । चत्वारो वेदाः। चतुर्णामपि वेदानां चत्वार उपवेदाः। ते च ऋग्वेदस्यायुर्वेदो यजुर्वेदस्य धनुर्वेदस्सामवेदस्य गान्धर्ववेदोऽथर्ववेदस्य च स्थापत्यवेदः। स्थापत्यवेद एव वास्तुशास्त्रस्यादिन्तमेन ग्रन्थत्वेन स्वीक्रियते । इत्थं शास्त्रस्यास्य मूलं वेद एव । वस्तुतस्तु वास्तुशब्दस्य साक्षादर्थो निवासस्थानमेव वर्तते यतोहि संस्कृतव्याकरणानुसारं शब्दस्यास्योत्पत्तिः वस् धातोर्जायते । यस्य प्रयोगो निवासार्थे क्रियते । निवासस्य चिन्तनसमये गृहस्येव चित्रं मनसि स्फुरति। भारतीयमनीषिभिः चतुर्ष्वाश्रमेषु गृहस्थाश्रमस्य महत्त्वं सर्वाधिकं स्वीकृतम् । गृहस्थस्य वासो गृह एव भवति । गृहं बिना गृहस्थस्य क्रियाः न सिद्धयन्ते। यथोक्तम्-

''गृहस्थस्य क्रियाः सर्वाः न सिद्ध्यन्ति गृहं विना''।[1]

अनेनेव गृहस्य महत्त्वं ज्ञायते । वास्तुशास्त्रीयग्रन्थेषु भूमिचयन-दिक्कालनिर्धारण-वास्तुपदविन्यास-शालविधान-शिलान्यास-गृहनिर्माणादीनां विचारो मुख्यरूपेण प्राप्यते ।

शोधपत्रेऽस्मिन् बहुतलीयावासीयभवनेषु शालविधानस्य वर्णनं क्रियते। आधुनिकयुगेऽस्मिन् भूमेः न्यूनताकारणतः बहुतलीयावसीयभवनानां प्रचलनमस्ति। यस्य मुख्यकारणं जनसंख्यावृद्धिरेव वर्तते। आवासादीनामावश्यकतायाः पूर्तये बहुतलीयावासा अत्यधिकं महत्वं भजन्ते। प्राचीनकालेऽपि बहुतलीयभवनानां निर्माणं भवति स्म। यस्य प्रमाणं शास्त्रीयग्रन्थेषु स्पष्टरूपेणोपलभ्यते परञ्च तस्मिन् समये बहुतलीयावासानां कारणं जनसंख्याघनत्वं नासीत् अपितवेतस्य मुख्यप्रयोजनं गृहस्य सौन्दर्यवर्धनं कलात्मकता चासीत् । एषु बहुतलीयभवनेषु शालाविधानस्य विचारोऽपि प्रमुखत्वेन वास्तुग्रन्थेषु प्राप्यते । वास्तुशास्त्रे शालाशब्दस्य प्रयोगः

---

1. उदधृतं वास्तुरत्नाकरः भूपरिग्रहप्रकरणम् श्लो.

ISSN : 2249-5045

SHODHA SAMIKSHA

शोधसमीक्षा

[A National Peer Reviewed Refereed Reserch Journal in Education and Sanskrit]

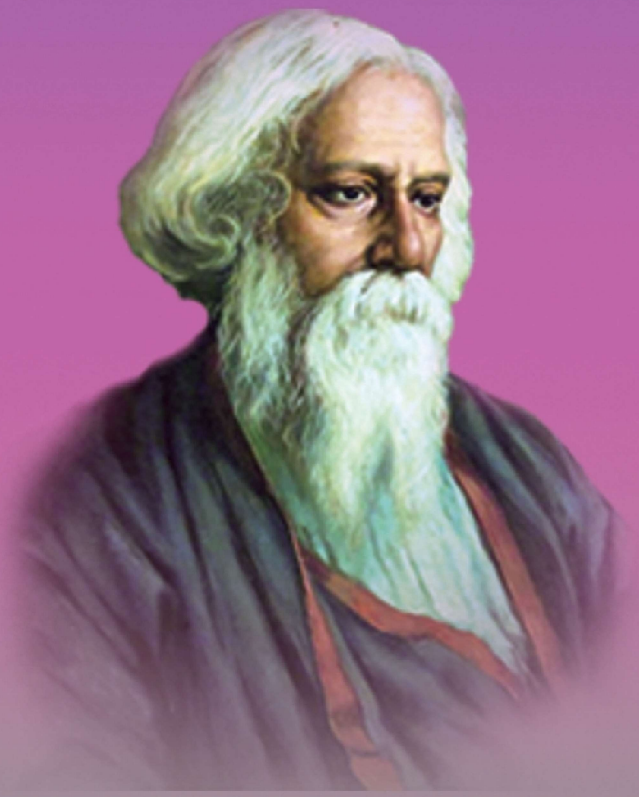

Vol.XI
Refereed & Peer Reviewed Journal

ISSUE-I

January-June-2021
www.shodhasamiksha.com

VOL.XI. ISSUE - I : JANUARY-JUNE-2021 ISSN : 2249-5045

SHODHA SAMIKSHA

A NATIONAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL IN EDUCATION & SANSKRIT

ŚODHA SAMĪKṢĀ

Editor-in-Chief

Dr. Sanat Kumar Rath

Department of Education,
Visva-Bharati, Santiniketan, West Bengal.

Associate Editors

Prof. Ramakant Mohalik
Prof. RadhagovindaTripathy
Dr. Paramita Panda
Dr. Somanath Dash

Published by

RATHA SEVA PRATISTHANAM

Sainkul, Keonjhar, Odisha, India, PIN - 758043
E-mail : shodhasamiksha74@gmail.com
WEBSITE :www.shodhasamiksha.com

SHODHA SAMIKSHA
ŚODHA SAMĪKṢĀ
शोधसमीक्षा

A NATIONAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL IN EDUCATION & SANSKRIT

VOL.XI, ISSUE-I, JANUARY-JUNE, 2021

ISSN : 2249-5045

Published by

RATHA SEVA PRATISTHANAM

Sainkul, Keonjhar, Odisha, India, PIN - 758043

E-mail: shodhasamiksha74@gmail.com

Price - Rs. 1000/-

Copies - 500

© Copy right reserved

Printed at – *Susana Computers, Near Ramakrishna Paradise, Old Maternity Hospital Road, Tirupati, Mob.No. 9394895343*

SHODHA SAMIKSHA

A NATIONAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNALIN EDUCATION & SANSKRIT

VOL.XI, ISSUE - I : JANUARY-JUNE-2021 ISSN : 2249-5045

सूचीपत्रम् (CONTENT)

Sl.No./Subject	*Author*	*Page*
15) 'YOGA-EDUCATION' IS THE BEST PANACEA FOR HEALTHY SOCIETY	Dr.Prashanta Kumar Dash	149-153
16) मानवजीवनस्यादर्शः श्रीमद्भगवद्गीतायाः स्थितप्रज्ञः	डॉ.डायालालः मालदेभाई मोकरिया	160-154
17) विविधवास्तुदेवानां परिचयः	डा० देशबन्धुः	17-1611
18) अनुसन्धानपदव्याख्यानम्	डा० सोमनाथदाशः	17217-6
19) परिभाषेन्दुशेखरे पञ्चानुबन्धानां विश्लेषणम्	देवसुजन मुखार्जी	177-183

------ 0 -------

विविधवास्तुदेवानां परिचयः

डा० देशबन्धुः

सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः

श्रीलालबहादुरशास्त्रिराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्

नई दिल्ली-१६

भारतीयज्ञानविज्ञानस्य वैशिष्ट्यमिदं यत् भारते सर्वविधविज्ञानस्य मूले अध्यात्म एव विद्यते । भारतस्य एकाऽपि कला एकमपि शास्त्रमेकमपि विज्ञानं एतादृशं नास्ति यस्य मूले देवतत्वानि न सन्ति । अस्माकं ऋषिभि : निदर्शनं :कल्पनाया :सर्वेषु शास्त्रेषु देवतत्वानां कल्पना कृता । अस्या -शब्दब्रह्मवादरसब्रह्मवादवास्तुब्रह्मवादादिषु भवति । जड्पदार्थेषु - चैतन्यस्य कल्पनमेव भारतीयदर्शनस्य मर्म इति।एतदेव भारतीयवास्तु-कलायामौलिकं वैशिष्टयम्।भोजदेवेनापि सम :राङ्गणसूत्रधारस्य प्रथमपद्य एव वास्तुब्रह्म लोकत्रयशिल्पिरूपेण परिकल्प्य अस्य कथनस्य पुष्टि कृता । :

-स पातु भुवनत्रयसूत्रधार :देव"
स्त्वां बालचन्द्रकलिकाङ्कितजूटकोटि:
एतत् समग्रमपि कारणमन्तरेण
कात्स्न्यादसूत्रितमसूत्र्यत येन विश्वम् ॥"[1]

एवं मङ्गलाचरणे ग्रन्थकारेण लोकत्रयशिल्पिभूतभावनभगवान् शङ्करसूत्रधाररूपेण आरोपितो येन कारणं विनाऽपि समग्रस्यास्य : विश्वस्य रचना कृता । भारतीयवास्तुकलायावैशिष्ट्य :म् "अध्यात्मनिष्ठा" प्रधानप्रयोजनं :एव वर्तते। एतन्निश्चितं यत् भारतीयभवननिर्माणकलाया भारतीयजनानां धार्मिकचेतनां मूर्तरुपप्रदानमेवासीत् । प्रस्तरेषु पाषाणखण्डेषु भारतीयात्मायासाक्षात्कार एव भारतीयवास् :तुकलाया : वैशिष्ट्यम् । इदं वैशिष्ट्यं भारतीयवास्तुशास्त्रस्य मूलेऽपि राजते। भारतीयवास्तुशास्त्रस्य विविधेषु प्रसङ्गेषु अङ्गभूतकार्येषु देवत्वकल्पनं

[1] समराङ्गणसूत्रधार –११/

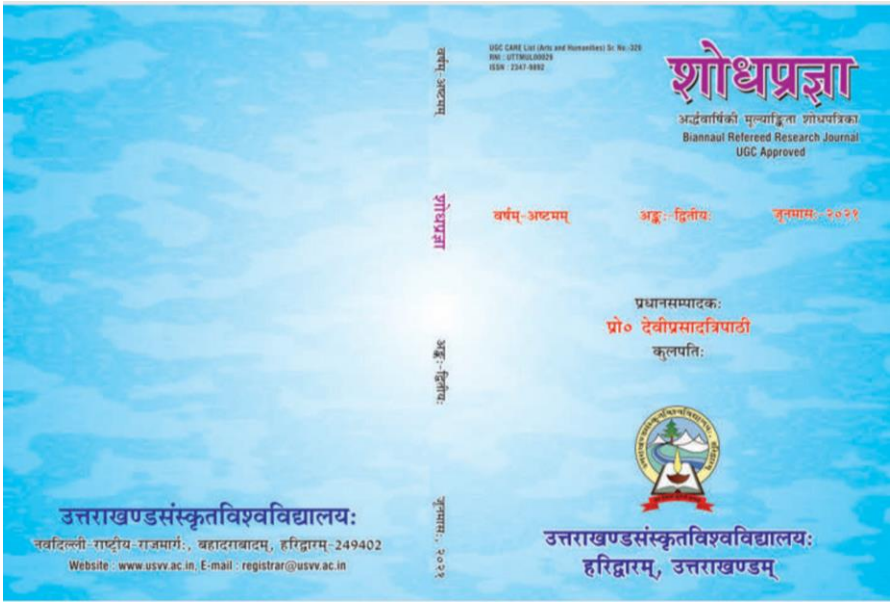

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	नाम	पृष्ठ सं.
1.	शिक्षाशास्त्रस्य शास्त्रत्वम्	डॉ. नितिनकुमारजैनः	1
2.	वैदिकवाङ्मये धर्मस्वरूपविमर्शः	डॉ. हनुमान मिश्रः	7
3.	छान्दोग्योपनिषदि वर्णितम् धर्मस्वरूपम्	डॉ. कमला पन्तः	12
4.	शाङ्करवेदान्ते ब्रह्मजीवसम्बन्धयोर्मध्ये वादत्रयस्याख्यारणा	डॉ. कपिल: गौतमः	18
5.	काव्यशास्त्रग्रन्थेषु साहित्यदर्पणः	डॉ. कृष्णकुमारकुमावतः	23
6.	अद्वैतसिद्धान्तशिरोमणिः श्रीमधुसूदनसरस्वती	डॉ. मंजुनाथ एस.जी.	35
7.	संस्कृतसाहित्ये नीतिविमर्शः	डॉ. कंचन तिवारी	39
8.	होराशास्त्रदृष्ट्या सन्तानसुखयोगानां विवेचनम्	डॉ. प्रभाकर पुरोहितः	42
9.	पाणिनीयादिग्रन्थेषु वर्णिता वर्णोच्चारणशिक्षा	डॉ. दामोदर परगांई राकेशकुमारः	59
10.	उत्तराखण्डे संस्कृते[नू]दिते साहित्ये हास्यरसः	डॉ. रितेश कुमारः नवीनः	65
11.	संस्कृतसाहित्ये हिमालयस्य प्रमुखाः पर्वतश्रृंखलाः	सौरभकण्डवालः	70
12.	टीकाग्रन्थानामर्थावबोधने वैशिष्ट्यम्	डॉ.सुधाकरमिश्रः	74
13.	अर्वाचीनसंस्कृतकाव्यपरम्परा	डॉ. ब्रजेन्द्रकुमारसिंहदेवः	80
14.	उपसर्गनिपातयोः प्रयोगः, तयोः को भेदः	डॉ. राकेश कुमार सिंहः	91
15.	मनोविकारों के निवारण में प्राणायाम की उपादेयता	डॉ. सचिन कुमार डॉ. अलका देवी	94
16.	वसुगुप्त कृत शिवसूत्र में मोक्ष का निरूपण	अरविन्द कुमार भारद्वाज	100
17.	गृहप्रवेशमुहूर्त–विमर्श	डॉ. देशबन्धु	105
18.	शिक्षा में भारतीयता	डॉ. देवेश कुमार मिश्र	113
19.	श्रीमद्भगवद्गीता व कर्मयोग शिक्षा	डॉ. दिनेश कुमार	124
20.	"मंत्र साधना" का महत्व एवं मानव जीवन में इससे पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	एकता भट्ट डॉ. दीपक कुमार	129
21.	लोक एवं शास्त्रों में विवाह संस्कार के निष्पादन की प्रक्रिया का एक तुलनात्मक अध्ययन :– गढ़वाल हिमालय के सन्दर्भ में	प्रो. डी.पी.सकलानी डॉ. सम्पत्ति नेगी	134
22.	ध्वनि से अन्य काव्यतत्वों का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. मनोज किशोर पन्त डॉ. अनुरिषा	140

ISSN : 2347-9892

गृहप्रवेशमुहूर्त - विमर्श

डॉ०देशबन्धु
सहायकाचार्य
वास्तुशास्त्रविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ

विश्व की आदिन्तम ज्ञानराशि वेद है और वेदों में प्रतिपादित ज्ञान के सम्यक् अवगमन हेतु छः वेदाङ्गों की रचना हुई । इन छः वेदाङ्गों में से ही एक ज्योतिष वेदाङ्ग है जिसका विकसित स्वरुप हमें सिद्धान्त,संहिता और होरा आदि तीन स्कन्धों में विभक्त दिखाई देता है । इस ज्योतिष शास्त्र के वेदाङ्गत्व का मुख्य हेतु कालज्ञान ही है । वेद मानव को यज्ञ-कर्म में प्रवृत्त करते है और यज्ञों का सम्पादन काल पर ही आश्रित है अर्थात् यज्ञों को सम्पादित करने का एक निश्चित समय है जिसको हम मुहूर्त भी कह सकते है और उस काल का ज्ञान ज्योतिष वेदाङ्ग से होता है अतः कालज्ञान अर्थात् मुहूर्त ही इस शास्त्र के वेदाङ्गत्व का मुख्य हेतु है।यथोक्तम् –

"वेदास्तावत् यज्ञकर्मप्रवृत्ताः
यज्ञाः प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण ।
शास्त्रादस्मात् कालबोधो यतः स्याद्
वेदाङ्गत्वं ज्योतिषस्योक्तं तस्मात् ॥"[1]

यही मुहूर्त विचार ज्योतिषशास्त्र के संहिता स्कन्धान्तर्गत विविध मुहूर्त ग्रन्थों में अपने विकसित स्वरुप में दृष्टिगोचर होता है । वस्तुतः किसी भी कार्य की सफलता और असफलता में काल ही हेतु है ।इसका प्रमाण किसी एक निश्चित समय पर किये जाने वाले कार्यों का सफल होना तथा एक निश्चित समय पर किये जाने वाले कार्यों का असफल होना है । इस कालविशेष का वैज्ञानिक रीति से अध्ययन कर हमारे ऋषियों ने मुहूर्त ग्रन्थों का प्रणयन किया तथा उन ग्रन्थों में विविध कार्यों को सम्पादन करने के लिए विविध मुहूर्तों का निर्देश किया । मुहूर्तग्रन्थों में प्रतिपादित मुहूर्तों का ज्ञान कर मानव अपने जीवन में किए जाने वाले समस्त कार्यों को सम्पादित करने के लिए शुभ समय को जानने में सक्षम हो जाता है ।इन मुहूर्तों का विचार गृह के सम्बन्ध में भी किया गया है।गृह का निर्माण पार्थिव तत्वों से होता है,परन्तु उस गृह से सुख,समृद्धि और शान्ति की प्राप्ति हेतु जिन अपार्थिव तत्वों का विचार भारतीय आचार्यों ने किया,उनमें से मुहूर्त भी एक है। गृह मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। गृह, स्त्री-पुत्रादि भोगों और सुख को प्रदान करने वाला है।धर्म ,अर्थ और काम को देने वाला है।प्राणियों को सुख प्रदान करने वाला आश्रय स्थल है। ग्रीष्मादि ऋतुओं से रक्षा करने वाला है । केवल गृहनिर्माण से ही वापी,देवमन्दिरादि के निर्माण का समस्त पुण्यफल प्राप्त हो जाता है । तद्यथा-

" स्त्रीपुत्रादिकभोगसौख्यजननं धर्मार्थकामप्रदं

[1] सिद्धान्तशिरोमणि-कालमानाध्याय-श्लो.सं.-9

शोधप्रज्ञा

(अर्द्धवार्षिकी मूल्याङ्किता शोधपत्रिका)

प्रधानसम्पादकः
प्रो. देवीप्रसादत्रिपाठी
कुलपतिः

परामर्शदातृसमितिः
आचार्यः बालकृष्णः
प्रो. रमेशकुमारपाण्डेयः
प्रो. रूपकिशोरशास्त्री
प्रो. ओमप्रकाशसिंहनेगी
प्रो. दिनेशचन्द्रचमोला

सम्पादकमण्डलम्
प्रो. मोहनचन्द्रबलोदी
डॉ. प्रतिभा शुक्ला
डॉ. शैलेशकुमारतिवारी
डॉ. लक्ष्मीनारायणजोशी
डॉ. मनोजकिशोरपंतः
डॉ. रामरतनखण्डेलवालः
डॉ. उमेशकुमारशुक्लः

प्रबन्धसम्पादकः
श्रीगिरीशकुमारोऽवस्थी

वित्तव्यवस्थापकः
श्रीलखेन्द्रगौथियालः

शोधाधिकारी
डॉ. महेशचन्द्रध्यानी

टङ्कणकर्त्ता
श्रीत्रिभुवनसिंहः

शोधलेखमूल्यांकनसमितिः
प्रो. गणेशभारद्वाजः
प्रो. शिवशंकरमिश्रः
डॉ. कामाख्याकुमारः
डॉ. प्रकाशचन्द्रपंतः
डॉ. रामरतनखण्डेलवालः

ॐ

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला चतुर्दश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

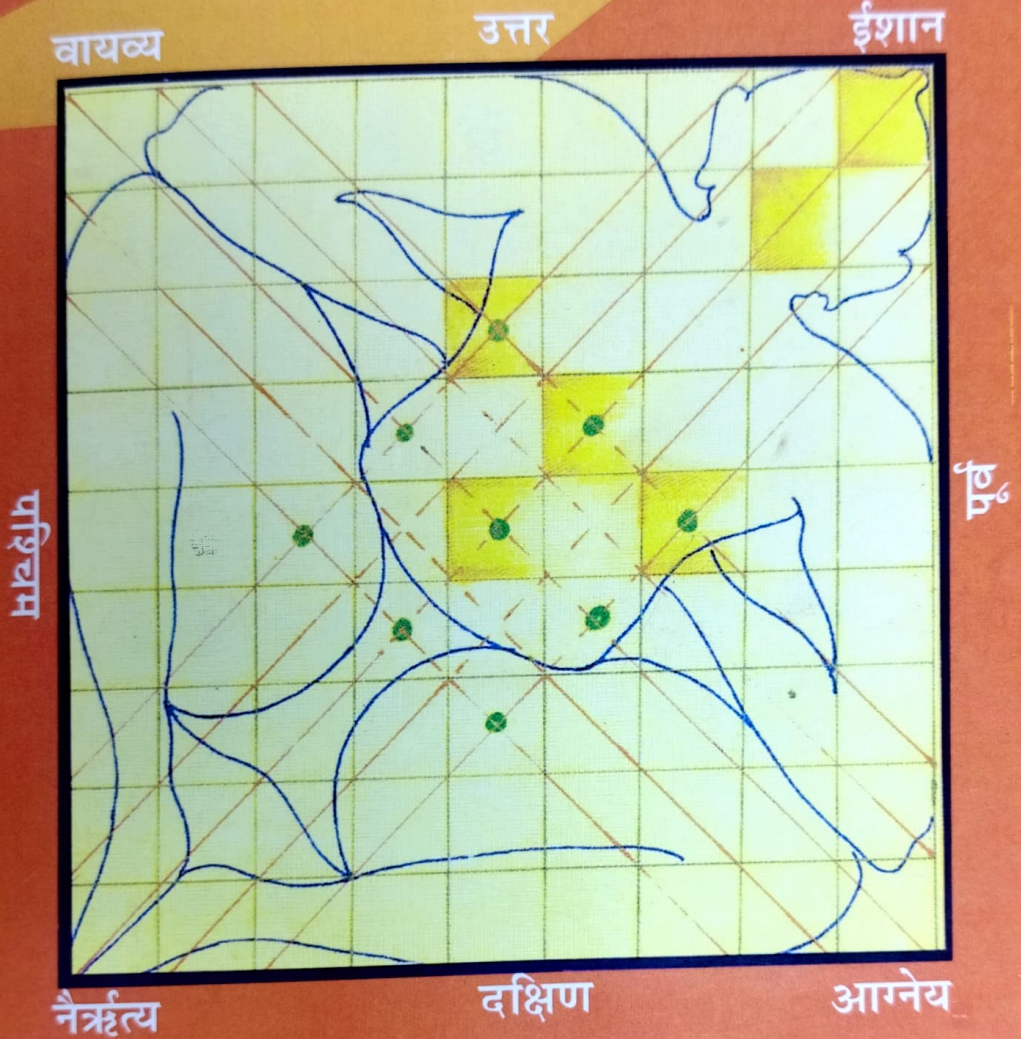

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-110016

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-चतुर्दश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

विषयानुक्रमणिका

1.	भारतीयवास्तुशास्त्रपरम्परा विकासश्च	**डॉ. हरिनारायणन मंकुलथिल्लाथ** सहाचार्योऽध्यक्षश्च ज्योतिषविभागः राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयः, तिरुवनन्तपुरम्, केरल	1
2.	वास्तुमण्डनस्य वैशिष्ट्यम्	**डॉ. अशोक थपलियालः** सहाचार्योऽध्यक्षश्च वास्तुशास्त्रविभागः **केवलकुमारः,** शोधच्छात्रः-वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत- विश्वविद्यालयः, नवदेहली	9
3.	नाट्यशास्त्रे वास्तुशास्त्रीयचिन्तनम्	**डॉ. मोहिनी अरोरा** सहायकाचार्या साहित्यविभागः **प्रणवः** शोधच्छात्रः-साहित्यविभागः केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः	16
4.	देवानामायतनविमर्शः	**डॉ. देशबन्धुः** सहायकाचार्यः वास्तुशास्त्रविभागः **भूपेश आनन्दः** शोधच्छात्रः-वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत- विश्वविद्यालयः, नवदेहली	31
5.	गृहनिर्माणे शल्यविचारः	**डॉ. वेदप्रकाशपाण्डेयः** ज्यौतिषाचार्यः, रा.सं. महाविद्यालयः, क्यार्टू, हि.प्र.	36

देवानामायतनविमर्शः

डॉ. देशबन्धुः एवं भूपेश आनन्दः

आदुपसर्गपूर्वकात् यत् इत्येतस्माद्धातोः ल्युट् प्रत्यये सति आयतनम् इति पदं सम्पद्यते। कोशाः आयतनशब्दार्थः यज्ञस्थानम् आहोस्वित् देवस्थानमिति स्वीकुर्वन्ति। कविकुलगुरुणा कालिदासेन स्वमहाकाव्ये कुमारसम्भवे आयतनशब्दस्य स्थानविशेषार्थे प्रयोगः कृतः। **स्नेहस्तदेकायतनं जगाम।**[1] एवमेव समग्रेष्वपि वाङ्मयेषु शब्दस्यामुष्य प्रयोगः स्थानविशेषार्थे वर्तत इति द्रष्टुं शक्यते। अनेनैव प्रकारेण देवतास्थानाय वास्तुशास्त्रेष्वपि आयतनशब्दो विनियुक्तो वर्तते। सर्वेषामपि देवानां स्वकीयमेकं वैशिष्ट्यं वर्तते नामरूपविभेदेन। अनेनैव प्रकारेण वासस्थान-स्यापि प्रत्येकं देवस्य वास्तुशास्त्रे विविधविधरीत्या विश्लेषणं कृतं वर्तते। प्रासादमण्डने पञ्चदेवानामायतनानां चर्चा वर्तते।

विविधानि आयतनानि-

सर्वप्रथमं ग्रन्थकारः सूर्यस्यायतनस्य चर्चां करोति-

'सूर्याद्गणेशो विष्णुश्च चण्डी शम्भुः प्रदक्षिणे।,
भानोर्गृहे ग्रहास्तस्य गणा द्वादशमूर्त्तयः।।'[2]

सूर्यस्य पञ्चायतने मन्दिरस्य मध्ये सूर्यस्य स्थापनं, ततः प्रदक्षिणक्रमेण यथाक्रमं सर्वादौ गणेशस्य ततः लक्ष्मीकान्तस्य ततः चण्डिकायाः ततोऽकारणकरुणावरुणालयस्य भगवतो हिमगिरिसुतानाथस्य शिवस्य स्थापनं कर्तव्यम्। एतदतिरिच्य सूर्यमन्दिरे सूर्यचन्द्रभौमबुधबृहस्पति-शुक्रमन्दरराहुकेतूनामपि स्थापनं कर्तव्यम्। अपराजितपृच्छाया आयतनदेवानुक्रमनिर्णयसंज्ञके सूत्रे सूर्यायतने ग्रहादीनां क्रमो यथा भवति-

'आग्नेय्यां तु कुजः स्थाप्यो गुरुर्याम्ये प्रतिष्ठितः।
नैर्ऋत्ये राहुसंस्थानं पश्चिमे चैव भार्गवः।।
वायव्ये केतुसंस्थानं सौम्यायां बुध एव च।
ईशाने च शनिं दद्यात् प्राच्यां चैव तु चन्द्रमाः।।'[3]

ग्रन्थकारस्य मते आग्नेयकोणे मङ्गलस्य स्थानं भवेत्, याम्ये च कोणे बृहस्पतेः स्थापना भवेत्, नैर्ऋत्ये कोणे राहोः स्थानं कल्पयेत्। पश्चिमे च भार्गवस्य शुक्रस्य स्थानं कल्प्यम्, वायव्यकोणे च केतोः स्थानं प्रकल्प्यम्, ईशाने च कोणे शनये स्थानं प्रदातव्यम्। अथ च

---

1 कुमारसम्भवम् 7/5
2 प्रासादमण्डनम् 2/41
3 अपराजितपृच्छा 12/16-17

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला – पंचदश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-110016

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-पंचदश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी
आचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

विषयानुक्रमणिका

1	लीलावत्यां क्षेत्रव्यवहारः	**डॉ. विजेन्द्रकुमारशर्मा** अध्यक्षः, ज्योतिषविभागः केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वेदव्यासपरिसरः, बलाहरः हिमाचलप्रदेशः	1
2	वास्तुक्षेत्राकृत्यनुसारेणपदविन्यासभेदाः	**डॉ. अशोक थपलियालः** सहाचार्यो वास्तुशास्त्रविभागः **सोनाली**, शोधच्छात्रा वास्तुशास्त्रविभागः श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः , नवदेहली	7
3	प्रश्नविचिन्तने प्रश्नवाक्यस्य प्राधान्यम्	**डॉ. गिरीश एम.पी.** सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयः तिरुवनन्तपुरम्	15
4	चम्बानगरस्य मन्दिराणां वास्तुसंरक्षणे पर्यावरणस्य भूमिका	**डॉ. देशबन्धुः** सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः **सन्तोषकुमारः** शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः , नवदेहली	20
5	वास्तुसौख्यग्रन्थोक्तवृक्षपादपाना-मौषधीयगुणविमर्शः	**डॉ. प्रवेश व्यासः** सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः **प्राची गुप्ता**, शोधच्छात्रा, वास्तुशास्त्रविभागः श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली	28
6	वास्तुशास्त्रे मुहूर्त्तस्योपादेयता	**डॉ. रतीशकुमार झा** अतिथिव्याख्याता, ज्योतिषविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली- 16	33

चम्बानगरस्य मन्दिराणां वास्तुसंरक्षणे पर्यावरणस्य भूमिका

डॉ. देशबन्धुः
सन्तोषकुमारः

चम्बानगरं हिमाचलप्रदेशस्य उन्नतपर्वत शृंखलासु अवस्थितं प्रसिद्धस्थलं वर्तते।[1] हिमाचलप्रदेशस्य नगरमिदं मन्दिराणां नगरं, कलानगरं, आकर्षकपर्यटनस्थलञ्च वर्तते। नगरस्यास्य नाम वर्मनवंशीयराजकन्याचम्पावत्याः नाम्ना स्थापितम्। प्राचीनकालादेव चम्बानगरं भारतीयकलासंस्कृतेश्च प्रसिद्धकेन्द्रमस्ति।[2] प्राचीनकालस्य अनेकचिह्नानि सम्प्रत्यपि दृश्यन्ते। नगरस्यास्य संस्कृतिः कलाश्च अत्याधिकसमृद्धा प्रसिद्धा चास्ति। अत्रत्यं समस्तक्षेत्रं पर्वतीयम्। जनानां वेशभूषा, वासः, आचारव्यवहारः, संस्कृतिश्च पर्वतीयविविधताः प्रदर्शयन्ति। नगरस्य वैशिष्ट्यमिदं यत् अत्रत्याः नृपाः प्रजाश्च धार्मिकप्रवृत्तियुक्ताः आसन्। तैरेव नगरस्यास्य विविधस्थलेषु मन्दिराणि धार्मिकस्थलानि च निर्मितानि।[3] एतेषु मन्दिरेषु भक्तानां मनसि सात्विकगुणानां प्रादुर्भावः श्रद्धाभक्तेश्च सञ्चारः सञ्जायते। मन्दिरे भक्तिभावनायाः प्रत्यक्षरूपेण प्राकट्यं भवति। देवभूमिहिमाचलस्य चम्बानगरस्य विविधेषु मन्दिरेष्वपि श्रद्धालवः एतादृशानां सात्विकगुणानां विकासाय आगच्छन्ति। नगरस्य सौन्दर्यं धार्मिकनिष्ठाञ्च शब्देषु व्यक्तीकर्तुं न शक्यते। जनानां मनसि विश्वासोऽस्ति मन्दिरदर्शनमात्रेण मानवस्य दुःखानां निवारणं, गृहे सुखसमृद्धिश्च वर्धते। रावीनद्याः तटे स्थितेऽस्मिन् नगरे शैववैष्णवशाक्तमन्दिराणि च प्रामुख्येन वर्तन्ते।[4] शाक्तमन्दिरेषु प्रमुखं मन्दिरमस्ति चम्पावतीदेव्याः। मन्दिरमिदं नगरस्य प्राचीनमन्दिरेष्वैकम्। शिखरशैल्यां निर्मितं मन्दिरमिदं राज्ञा साहिलवर्मनेन स्वपुत्र्याः स्मृतौ स्थापितम्। अपरं शिखरशैल्यां निर्मितमन्दिरं वजरेश्वरीमातुः मन्दिरमस्ति। मन्दिरमिदं नगरस्योत्तर-भागे विलसति। अन्यशाक्तमन्दिरेषु सूहीमातामन्दिरं, चामुण्डामातामन्दिरं, शीतलामातामन्दिरञ्च प्रसिद्धं वर्तते। वैष्णवमन्दिरेषु श्रीलक्ष्मीनारायणस्य मन्दिरं सर्वत्र प्रसिद्धमस्ति। मन्दिरमिदं पारम्परिकवास्तुकलायाः मूर्तिकलायाश्च उत्कृष्टोदाहरणं प्रस्तौति। मन्दिरस्यास्य निर्माणमपि शिखरशैल्यां सञ्जातम्। हरिरायनामकमपरं मन्दिरमपि क्षेत्रस्य प्रमुखं विष्णुमन्दिरं वर्तते। वंशीगोपालनामकस्य प्रसिद्धविष्णुमन्दिरस्य निर्माणमपि शिखरशैल्याम् अभूत्। शैवमन्दिरेषु लक्ष्मीनारायणमन्दिरं निकषा एव गौरीशङ्करस्य प्रसिद्धमन्दिरं वर्तते। अस्मिन्मन्दिरे शिवपार्वत्योः पूजनं क्रियते। चम्बानगरस्य सर्वाणि मन्दिराणि ऐतिहासिक-सांस्कृतिक-अध्यात्मिकदृष्ट्या च

1 भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृ.स.-224
2 हिमाचली इतिहास और संस्कृति के अंश, पृ.स.18,
3 तत्रैव पृ.स.28
4 Report On Scheduled CastesAnd Scheduled Tribes, Page No 72-76

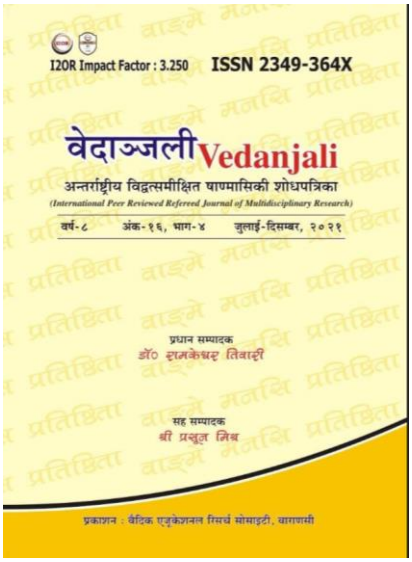

I2OR Impact Factor : 3.250
ISSN 2349-364X
वेदाञ्जली Vedanjali
अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोधपत्रिका
(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)
वर्ष-८
अंक-१६, भाग-४
जुलाई-दिसम्बर, २०२१
प्रधान सम्पादक
डॉ० रामकेश्वर तिवारी
सह सम्पादक
श्री प्रसून मिश्र
प्रकाशन : वैदिक एजुकेशनल रिसर्च सोसाइटी, वाराणसी

- झीनी–झीनी बीनी चदरिया : बुनकर समाज की शोषण–गाथा 260–262
  मु0 सिराज खाँ
- पञ्चाङ्ग निर्माण में वेधशाला की उपादेयता 263–266
  कोमल सिंह
- श्रीमद्भगवद्गीता और सांख्य सम्मत गुणत्रय निरूपण 267–269
  डॉ0 माधुरी पाण्डेय
- फणीश्वरनाथ 'रेणु' के उपन्यासों में बदलते भारतीय परिवेश की अभिव्यक्ति 270–273
  पसन्द पाल
- रमणिका गुप्ता की कहानियों में आदिवासी जीवन 274–276
  मीना सिंह
- वास्तुशास्त्रदिशा प्रासादानां जात्यष्टकम् 277–278
  भूपेश आनन्दः व डॉ0 देशबन्धुः
- जैनाचार्यों की जीवनी एवं उनकी उपलब्धियाँ : एक विश्लेशणात्मक अध्ययन 279–282
  डॉ0 शिव कुमार रवि
- मानवाधिकार का अर्थ एवं सिद्धान्त 283–284
  प्रीती लाल
- प्राक् औपनिवेशिक युग में भारत में सांस्कृतिक परिवर्तन 285–286
  डॉ0 विकाश कुमार
- शाहजहां का शासनकाल : मुगलकाल का स्वर्ण–युग 287–288
  इम्त्याज अंसारी
- महाभारत काल में वाणिज्य 289–290
  डॉ0 रमा कुमारी
- THE EVIL PRACTICES UNDER THE MUGHALS 289–291
  Dr. Md. Rehan Ghani

वास्तुशास्त्रदिशा प्रासादानां जात्यष्टकम्

• भूपेश आनन्दः व डॉ. देशबन्धुः

प्रस्तावना- वास्तुशास्त्रीये मते हितगिरेरुत्तरे, पार्श्वे कृल्पवृक्षाणां सुन्दरं वनमस्ति । इदं च स्थानम् अकारणकरुणावसणालयस्य भगवतः शिवस्योपासना विहिता। देवायतनानां विविधविधजातीनां संज्ञानार्थमुपक्रमो विहितः

हिमाद्रेरुत्तरे पार्श्वे चारूदारूवनं परम्।
पवनं शङ्करस्थानं तत्र सर्वैः शिवोंचितः॥[1]

दैवैः दितिसुतैश्च यथाक्रमं प्रासादानां विविधाविधाकारैः भगवान् शिवः विविधप्रकारैरस्तावि । अथास्या एव स्तुतेरपवर्गरूपं भगवतः शिवस्य दितिसुतैर्दैवैश्च कृतस्य वन्दनस्य चतुर्दशप्रकारकाकारितानि प्रासादानां स्वरूपाणि अजायन्त-

प्रासादाकारपूजाभिर्दैवदैत्यादिभिः प्रमात्।
चतुर्दशसमुत्पन्नाः प्रासादानां च जातयः॥[2]

चतुर्दशजातिसम्पृक्ता प्रासादाः अजायन्त तत्रपि अष्टौ प्रकाराः प्रासादजातयः वास्तुशास्त्रे उत्तमकोट्यां परिगणिता।

जात्यष्टकम्- ताश्च अष्टौ प्रासादजातयो यथा-(1)नागरः, (2)द्राविडः, (3)भूमिजः, (4)लतिनः, (5)सान्धारः, (6)विमाननागरः, (7)पुष्पकाङ्किता तथा च (8)मिश्रजातप्रासादः । इमा सर्वा अपि प्रासादजातयः सर्वेषामपि देवानां कृते निर्मातुं शक्यन्ते परं विशिष्य भगवते शिवाय सर्वेषामपि प्रासादस्वरूपाणां प्रयोगः श्रेयस्करो मनुते आचार्यः-

नागरा द्रविडाश्चैव भूमिजा-लतिनास्तथा।
सावन्धारा विमानादि नागराः पुष्पकाङ्किता॥
प्रासादमिश्रकाश्चैवमष्टौ जातिषु चोत्तमाः।
सर्वदेवेषु कर्तव्याः शिवस्यापि विशेषतः॥[3]

देवकालिकादिक्रमेण जातीनां व्यवस्थात्र वास्तुशास्त्रे वर्तते। सर्वासामपि प्रासादजातीनां देशभेदानुसारं सम्यग्विश्लिष्य देवानां कृते निर्माणं कर्तव्यम्। इमाश्चतुर्दशप्रासादजातयः लोकव्यवहारानुकूलमनुरूपं वा ज्ञातुं शक्यन्ते-

प्रासादानां च सर्वेषां जातयोर्देशभेदतः।
चतुर्दश प्रवर्तन्ते ज्ञेया लोकानुसारतः॥[4]

कथङ्कारमस्याः प्रासादजातेः सम्यग्ज्ञानं प्राप्तुं शक्यमिति विविदिषायां ग्रन्थकार आह-

लक्ष्यलक्षणतोऽभ्यासाद् गुरूमार्गानुसारतः।
प्रासादभवनादीनां सम्यग्ज्ञानमवाप्यते॥[5]

देवायतनस्य भवनस्य निर्माणविधीन् वास्तुज्ञानस्य लक्ष्यलक्षणानि सम्यगभ्यस्य वास्तुशास्त्रनदीष्णानां गुरूणां कृपया प्रासादजातीनां सम्यग्ज्ञानमवाप्तुं शक्यते। इतः परं ग्रन्थकारेण प्रासादारम्भनियमानां कथनं विहितं वर्तते ।ग्रन्थकारस्य मतं वर्तते प्रासादनिर्माणात् प्राक् कर्ता शुभमुहूर्तमीक्षेत शुभलग्नस्य परीक्षणं कुर्यात्, उत्तमनक्ष त्रमाचिनोत्, पञ्चग्रहाणां रविसोमबुधगुरुशुक्राणां बलविचारं विदध्यात्, यदि इमे पञ्चग्रहाः बलशालिनो भवेयुस्तदा मासविचारं विदध्यात् स ङ्क्रान्ते, वत्सादेः निषेधकालस्य परित्यागेन प्रासादनिर्माणसम्बद्ध का र्यमारभेत।[6] अथास्मिन् प्रासादनिर्माणावासरे नारदस्य कथनं वर्तते यदि लग्ने सूर्यचन्द्रमङ्गलराहुकेतुशनयः स्युस्तदा कर्तुः मृत्योः कारणं भवन्ति शेषा ग्रहाः धान्यादिसुखानां विस्तारकाः भवन्ति-

लग्नस्थाः सूर्यचन्द्राराहुकेत्वर्कसूनवः।
कर्तुर्मृत्युसुदाश्चान्ये धनधान्यसुखप्रदाः॥[7]

वास्तुशास्त्रदिशा प्रासादानां जात्यष्टकम्

● **भूपेश आनन्दः** व **डॉ. देशबन्धुः**

प्रस्तावना- वास्तुशास्त्रीये मते हितगिरेरूत्तरे, पार्श्वे कृल्पवृक्षाणां सुन्दरं वनमस्ति । इदं च स्थानम् अकारणकरुणावसणालयस्य भगवतः शिवस्योपासना विहिता। देवायतनानां विविधविधजातीनां संज्ञानार्थमुपक्रमो विहितः

हिमाद्रेरूत्तरे पार्श्वे चारूदारूवनं परम्।
पवनं शङ्करस्थानं तत्र सर्वैः शिर्वोचितः॥[1]

दैवैः दितिसुतैश्च यथाक्रमं प्रासादानां विविधाविधाकारैः भगवान् शिवः विविधप्रकारैरस्तावि । अथास्या एव स्तुतेरपवर्गरूपं भगवतः शिवस्य दितिसुतैर्दैवैश्च कृतस्य वन्दनस्य चतुर्दशप्रकारकाकारितानि प्रासादानां स्वरूपाणि अजायन्त-

प्रासादाकारपूजाभिर्दैवदैत्यादिभिः प्रमात्।
चतुर्दशसमुत्पत्राः प्रासादानां च जातयः॥[2]

चतुर्दशजातिसम्पृक्ता प्रासादाः अजायन्त तत्रपि अष्टौ प्रकाराः प्रासादजातयः वास्तुशास्त्रे उत्तमकोट्यां परिगणिता।

जात्यष्टकम्- ताश्च अष्टौ प्रासादजातयो यथा-(1)नागरः, (2)द्राविडः, (3)भूमिजः, (4)लतिनः, (5)सान्धारः, (6)विमाननागरः, (7)पुष्पकाङ्किता तथा च (8)मिश्रजातप्रासादः । इमा सर्वा अपि प्रासादजातयः सर्वेषामपि देवानां कृते निर्मातुं शक्यन्ते परं विशिष्य भगवते शिवाय सर्वेषामपि प्रासादस्वरूपाणां प्रयोगः श्रेयस्करो मनुते आचार्यः-

नागरा द्रविडाश्चैव भूमिजा-लतिनास्तथा।
सावन्धारा विमानादि नागराः पुष्पकाङ्किताः॥
प्रासादमिश्रकाश्चैवमष्टौ जातिषु चोत्तमाः।
सर्वदेवेषु कर्तव्याः शिवस्यापि विशेषतः॥[3]

देवकालिकादिक्रमेण जातीनां व्यवस्थात्र वास्तुशास्त्रे वर्तते। सर्वासामपि प्रासादजातीनां देशभेदानुसारं सम्यग्विश्लिष्य देवानां कृते निर्माणं कर्तव्यम्। इमाश्चतुर्दशप्रासादजातयः लोकव्यवहारानुकूलमनुरूपं वा ज्ञातुं शक्यन्ते-

प्रासादानां चं सर्वेषां जातयोर्देशभेदतः।
चतुर्दश प्रवर्तन्ते ज्ञेया लोकानुसारतः॥[4]

कथङ्कारमस्याः प्रासादजातेः सम्यग्ज्ञानं प्राप्तुं शक्यमिति विविदिषायां ग्रन्थकार आह-

लक्ष्यलक्षणतोऽभ्यासाद् गुरूमार्गानुसारतः।
प्रासादभवनादीनां सम्यग्ज्ञानमवाप्यते॥[5]

देवायतनस्य भवनस्य निर्माणविधीन् वास्तुज्ञानस्य लक्ष्यलक्षणानि सम्यगभ्यस्य वास्तुशास्त्रनदीष्णानां गुरूणां कृपया प्रासादजातीनां सम्यग्ज्ञानमवाप्तुं शक्यते। इतः परं ग्रन्थकारेण प्रासादारम्भनियमानां कथनं विहितं वर्तते ।ग्रन्थकारस्य मतं वर्तते प्रासादनिर्माणात् प्राक् कर्ता शुभमुहूर्तमीक्षेत शुभलग्नस्य परीक्षणं कुर्यात्, उत्तमनक्ष त्रमाचिनोत्, पञ्चग्रहाणां रविसोमबुधगुरुशुक्राणां बलविचारं विदध्यात्, यदि इमे पञ्चग्रहाः बलशालिनो भवेयुस्तदा मासविचारं विदध्यात् स ङ्क्रान्ते, वत्सादेः निषेधकालस्य परित्यागेन प्रासादनिर्माणसम्बद्धं का र्यमारभेत।[6] अथास्मिन् प्रासादनिर्माणावासरे नारदस्य कथनं वर्तते यदि लग्ने सूर्यचन्द्रमङ्गलराहुकेतुशनयः स्युस्तदा कर्तुः मृत्योः कारणं भवन्ति शेषा ग्रहाः धान्यादिसुखानां विस्तारकाः भवन्ति-

लग्रस्थाः सूर्यचन्द्राराहुकेत्वर्कसूनवः।
कर्तुर्मृत्युसुदाश्चान्ये धनधान्यसुखप्रदाः॥[7]

● **शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, (केन्द्रीयविश्वविद्यालयः) नवदेहली- 110016**
व
● **सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, (केन्द्रीयविश्वविद्यालयः) नवदेहली- 110016**

नक्षत्रशुद्धेर्विष गर्गाचार्यस्य मतं भवति उत्तरारोहिणीपुष्यमैत्रहस्तचित्रधनिष्ठापौष्यनक्षत्राणि शुभानि भवन्ति-

त्र्युत्तरेपि च रोहिण्यां पुष्ये मैत्रे उरद्वये।
धनिष्ठाद्वितीये पौष्ये गृहारम्भः प्रशस्यते॥[8]

वृद्धनारदेन काल शुद्धौ विचाराः प्रकटीकृ ताः यत् पुरप्रासादगृहारम्भः एवं एतेषां समाप्तिः च देवोत्थानैकादश्या अनन्तरं देवशयन्येकादश्याः पूर्वं विधातव्यः-

आरम्भं च समाप्तिं च प्रासादपुरसद्मनाम्।
उत्थिते केशवे कुर्यान्न प्रसुप्ते कदाचन॥[9]

मण्डनमते चैत्रे प्रासादनिर्माणे शोकः, वैशाखे धनागमः, ज्येष्ठमासे मृत्युः आषाढे पशुहरणम्, श्रावणे पशुवृद्धिः, भाद्रपदे शून्यम्, आश्विने कलहः कार्तिके भृत्यक्षयः, मार्गशीर्षे पौषे चान्नलाभः माघेऽग्निकाण्डम्, फाल्गुने श्रीप्राप्तिर्भवति-

चैत्रे शोककरं गृहादिरचितं स्यान्माधवेऽर्थप्रदं
ज्येष्ठे मृत्युकरं शुचौ पशुहरं तद्धद्धितं श्रावणे।
शून्यं भाद्रपदे त्विषे कलिहरे भृत्यक्षयं कार्तिके
धान्यं मार्गरहस्ययोर्दहनभीर्माघे श्रियं फाल्गुने॥[10]

पक्षविचारावसरे वशिष्ठसंहिताया मतमपि अत्र ध्यातव्यं भवति । शुक्लपक्षे प्रासादारम्भेन सर्वविधानि सुखानि भवन्ति, कृष्णपक्षे प्रासादारम्भेन तस्करभयं भवति। यदि गुरुशुक्रौ उदितौ स्यातान्तादा शुक्लपक्षे गृहारम्भकर्म सम्पादयेत्। गृहारम्भाय रात्रिकालः निषिद्धो वर्तते-

शुक्लपक्षे भवेत्सौख्यं कृष्णे तस्करतो भयम्।
गृहनिर्माणकार्येषु पक्षशुद्धिं विचिन्तयेत्॥
गीर्वाणपूर्वगीर्वाणमन्त्रिणौदृश्यमानयोः।
शुक्लपक्षे दिवाकार्यं न निर्माणञ्च रात्रिषु॥[11]

निष्कर्षः - अनेकेषां वास्तुशास्त्रीयग्रन्थानां संश्लेषणे अधययनेन शोधेनानुभवेन अस्मदीयेन यथाप्रा प्तम् आचार्यग्रन्थप्रमाणेन निश्चयीकृत्य वयं वक्तुं शक्नुमः यदत्र वास्तुविज्ञानपरम्परायां प्रासादचिन्तनावसरे अष्टौ प्रकारिकाः जातयः उत्तमत्वेनास्माभिर्ध्येयाः ।एतासां जातीनां स म्यक् यथाविधि प्रयोगेण ज्ञानेन च वयं देवताप्रीत्यर्थं भवितुमर्हामः साकमेव प्रासादनिर्माणे कुशलतामवाप्तुमर्हामः ।अतोस्माभि जातीनां प्रकाराः ज्ञेयाः ध्येयाः च भवन्तीति प्राचामा चार्याणां मतमुररीकृत्य विषयेमु ष्मिन् प्रयोगो विधातव्यो भवति ।इत्यवम्प्रकारेण प्रासादजातीनां प्रकाराः प्रासादनिर्माणकालश्चास्माभिर्ज्ञेयो भवति।

सन्दर्भाः –

1. प्रासादमण्डन 1/5
2. प्रासादमण्डन 1/6
3. प्रासादमण्डन 1/7-8
4. प्रासादमण्डन 1/9
5. प्रासादमण्डन 1/10
6. प्रासादमण्डन 1/11
7. नारदसंहिता 28/10
8. वृहद्वास्तुमाला 73
9. प्रासादमण्डन पृ- 25
10. राजवल्लभवास्तुशास्त्रम् 17
11. वशिष्ठसंहिता 39, 41, 42

❖

UGC - CARE LISTED ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

47 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबर-दिसम्बर) 2022 ई.

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-16

प्रकाशकः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

शोधप्रभा-प्रकाशनपरामर्शदात्रीसमितिः
प्रो. केदारप्रसादपरोहा, दर्शनपीठप्रमुखः
प्रो. सविता शर्मा, आधुनिकविद्यापीठप्रमुखः
प्रो. सदनसिंहः, शिक्षाशास्त्रपीठप्रमुखः
प्रो. जयकान्तसिंहशर्मा, वेदवेदाङ्गपीठप्रमुखः
प्रो. शीतलाप्रसादशुक्लः, साहित्यसंस्कृतपीठप्रमुखः

निर्णायकमण्डलसदस्याः (अक्टूबरमासाङ्कः, 2022)
प्रो. राजेश्वरमिश्रः, मिश्रभवनम्, 271/27, न्यू शान्तिनगरम्, गली सं. 1, कुरुक्षेत्रम्-136119, हरियाणा
प्रो. अमिता-शर्मा, सी-105 रुद्र अपार्टमेन्ट, प्लाटनं. 12 सेक्टर-6, द्वारका, नवदेहली- 110075
प्रो. कृष्णकान्तशर्मा, प्राच्यविद्याधर्मदर्शनसङ्कायः, काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी-221005, उ.प्र.
प्रो. रामकिशोरत्रिपाठी, अद्वैतवेदान्तविभागाध्यक्षः, सम्पूर्णानन्दसं.वि. विद्यालयः, वाराणसी-221002 उ.प्र.
प्रो. दामोदरशास्त्री, अध्यक्षः, संस्कृत-प्राकृतविभागः, जैनविश्वभारतीसंस्थानम्, लाडनूं-341306 नागौर, राजस्थानम्
प्रो. मनोजकुमारमिश्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, गङ्गानाथझापरिसरः, आजादपार्क, प्रयागराजः- 211001, उ.प्र.
प्रो. लक्ष्मीनिवासपाण्डेयः, निदेशकः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, के.जे.सोमैय्या-परिसरः, विद्याविहारः, मुम्बई
डॉ. कीर्तिकान्तशर्मा, 46-संगमविहारः, गलीसं. 10, नजबगढ, नवदेहली- 110043

ISSN 0974 - 8946

47 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबर-दिसम्बर) 2022 ई.

© श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
वेबसाइटसङ्केतः - www.slbsrsv.ac.in
ई-मेलसङ्केतः - shodhaprabhalbs@gmail.com
दूरभाषसङ्केतः - 011-46060609, 46060502

मुद्रकः - डी.वी. प्रिन्टर्स, 97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सम्पादकमण्डलम्

प्रो. जयकान्तसिंहशर्मा

प्रो. भागीरथिनन्दः

प्रो. के.भारतभूषणः

प्रो. प्रभाकरप्रसादः

प्रो. रामसलाहीद्विवेदी (संस्कृतभाषाशुद्धता)

डॉ. अशोकथपलियालः

डॉ. अभिषेकतिवारी (अंग्रेजीभाषाशुद्धता)

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

शोधसहायकः

मुद्रणसहायकः

डॉ. जीवनकुमारभट्टराई

प्रूफसंशोधकः

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. यास्कीयकाव्यालङ्कारसूत्रानुरोधेन संसृष्ट्यलङ्कारविषये वामनमतसमुच्छेदः -प्रो. भारतेन्दुपाण्डेयः 1-11

2. मम्मटाभिमतकाव्यलक्षणविमर्शः -डॉ. टी. महेन्द्रः 12-15

3. भारतीयज्ञानपरम्परायां वाक्यार्थविचारः -डॉ. मृगांकमलासी 16-26

4. चम्बानगरस्थस्य लक्ष्मीनारायणमन्दिरस्य वास्तुदृष्ट्या अध्ययनम् -डॉ. देशबन्धुः -श्रीसन्तोषकुमारः 27-35

5. उपनिषद्दृष्ट्या सङ्घटनस्य आवश्यकता -डॉ. नरेन्द्रकुमारपाण्डेयः 36-40

6. शब्दब्रह्मणः स्वरूपविमर्शः -श्रीशिवदत्तत्रिपाठी 41-46

7. जीवातौ तिङन्तपदव्युत्पादने मल्लिनाथस्य चिन्तनविशेषः -डॉ. रजनी 47-50

हिन्दी विभाग

8. छन्दःसमीक्षा में निरूपित अवष्टम्भ-व्यवस्था -प्रो. मीरा द्विवेदी 51-64

9. आचार्य चरक के अभिमत में सुखायु -डॉ दीप्ति वाजपेयी 65-71

10. 'नैषधीयचरितम्' महाकाव्य का ज्योतिषशास्त्रीय वैशिष्ट्य -प्रो. ब्रजेश कुमार पाण्डेय -डॉ. नीरज कुमार जोशी 72-83

चम्बानगरस्थस्य लक्ष्मीनारायणमन्दिरस्य वास्तुदृष्ट्या अध्ययनम्

डॉ. देशबन्धुः*
श्रीसन्तोषकुमारः**

हिमाचलप्रदेशस्य प्राचीनसंस्कृतिः, कला, आचार-व्यवहारः, परम्पराश्च विश्वस्मिन् प्रसिद्धा सन्ति। प्राचीनेतिहासः, प्रचलितलोकगीतानि, लोकगाथाः, लोकनृत्यानि, कलाः, वास्तुकलाः, लोकपरम्पराः, प्रथाश्च प्रदेशस्यास्य संस्कृतिर्वर्तते। अत्रत्यं ग्राम्यजीवनं, विभिन्नजातीनां पारस्परिकमादान-प्रदानम्, भौगोलिकभिन्नताश्च सुरम्यप्रदेशस्य सांस्कृतिक-न्यासोऽस्ति।[1] अनु सर्वेक्षणमत्र पञ्चसहस्त्रमन्दिराणि सन्ति। एतेषु सर्वाधिकमन्दिराणि शिवशक्तेश्च वर्तन्ते। अनेन सहैव भगवतः विष्णोः विभिन्नरूपाणां पूजनम् आराध्यदेवरूपेणापि क्रियते। एतेषु कानिचन मन्दिराणि सहस्त्रवर्षपुरातनानि सन्ति। प्रदेशोऽयं मन्दिराणां पवित्रभूमिर्वर्तते, तस्माद् देवभूमि इति नाम्ना प्रसिद्धोऽस्ति।[2] एतेषां मन्दिराणां स्वकीय एव प्राचीनेतिहासो वर्तते, अत एव प्रदेशोऽयं वास्तुकलार्थं प्रसिद्धोऽस्ति। प्रदेशस्यास्य मन्दिराणां वास्तुकला आकृत्याधारेण स्तूपाकारशैली, शिखरशैली, गुम्बदाकारशैली, पगौडाशैली, बंदछतशैली, समतलशैलीरूपेण च विभक्ता वर्तते। प्रदेशस्य चम्बानगरं प्रारम्भादेव स्वैतिहासिकं-धार्मिकस्थलैः विदेशेष्वपि लोकप्रियमस्ति। चम्बानगरम् ऐतिहासिकस्थलानां, मन्दिराणां, सार्वजनिकभवनानाम्, आकर्षकपर्यटकस्थलानाञ्च कृते प्रसिद्धमस्ति। नगरमिदं राजासाहिलवर्मणा दशमशताब्द्यां स्थापितम्। प्राचीनकालादेव चम्बानगरं भारतीयकलासंस्कृतेश्च प्रसिद्धकेन्द्रमस्ति।[3] नगरमिदं पाषाणैः विनिर्मित-मन्दिरैः विख्यातमस्ति। शिखरशैल्यां विनिर्मितानि मन्दिराणि नगरेऽस्मिन् प्रसिद्धानि सन्ति। रावीनद्याः तटे अवस्थितस्य नगरस्यास्य सौन्दर्यमतिमनोहरं वर्तते। धार्मिकस्थलमिदं भगवते विष्णवे समर्पितमस्ति यतोहि नगरेऽस्मिन् बहूनि विष्णुभगवतः मन्दिराणि सन्ति। एतेष्वेकं भगवतः लक्ष्मीनारायणदेवस्य मन्दिरमपि वर्तते। लक्ष्मीनारायणमन्दिरसमूहे षड्-मन्दिराणि क्रमशः सन्ति। एतेषु त्रीणि मन्दिराणि भगवतः विष्णोः, त्रीणि च भगवतः शिवस्य सन्ति।[4] तत्र प्रथमं मन्दिरं लक्ष्मीनारायणस्य वर्तते। एनं निकषा एव

---

* सहायकाचार्यः वास्तुशास्त्रविभागः, श्री.ला.ब.शा.रा.सं.वि., नई दिल्ली
** शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः, श्री.ला.ब.शा.रा.सं.वि., नई दिल्ली

1. हिमाचल प्रदेश अंधकार से प्रकाश की ओर, पृ.सं.-74
2. Discover Dalhousie, Chamba & Bharmour, Page No. 29.
3. हिमाचली इतिहास और संस्कृति के अंश, पृ.स.18,
4. Chamba Himalaya Amazing Land, Unique Culture, Page No.-192

ॐ

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला – द्वादश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एव मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

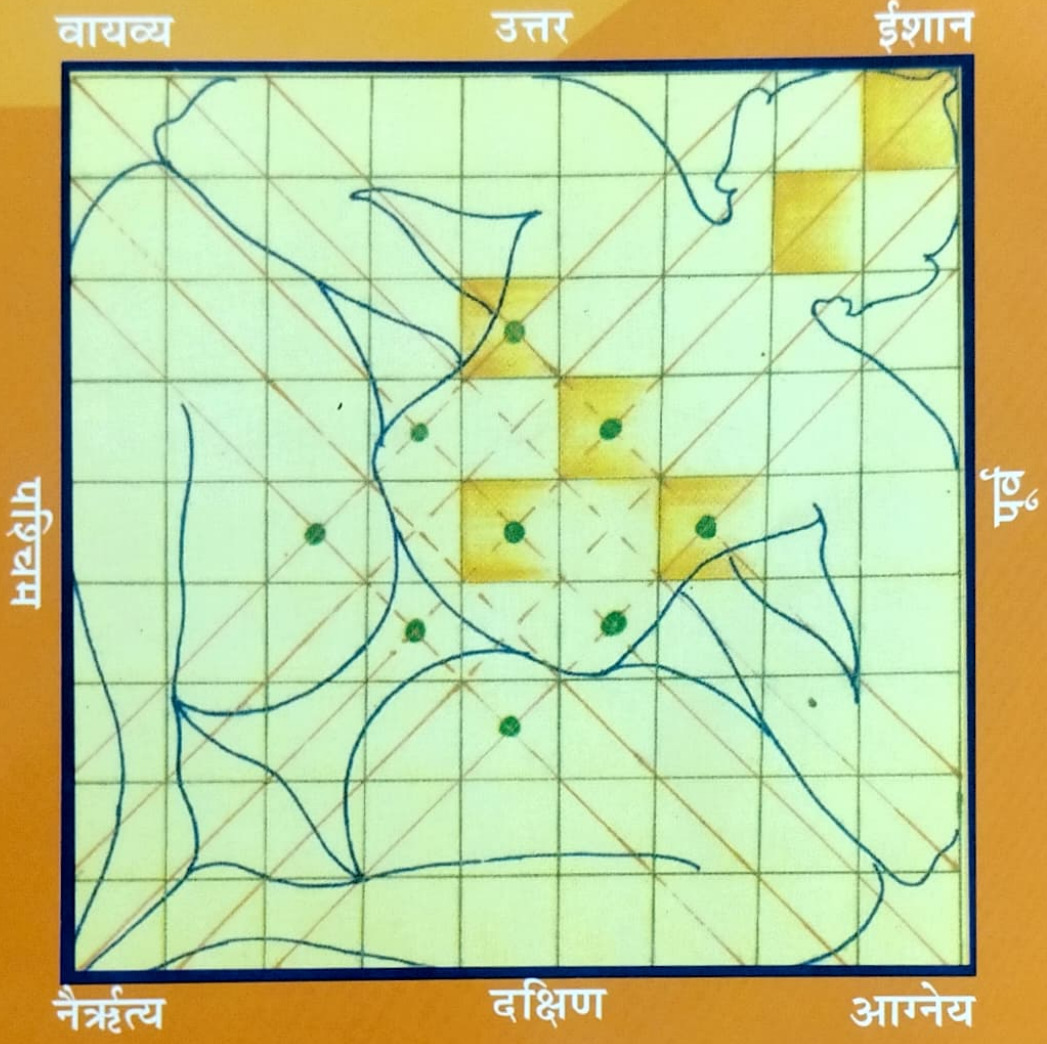

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-110016

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-द्वादश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

12.	द्वार, गवाक्ष, वरामदा एवं आँगन का विचार (भारतीय वास्तुशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में)	**प्रो. हंसधर झा** अध्यक्ष- ज्योतिष विभाग राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल	95-111
13.	श्रौतवेदी के निर्माण में वास्तुसिद्धान्त	**विद्यावाचस्पति** **डॉ.सुन्दरनारायणझा** सहाचार्य, वेदविभाग, श्री ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठ, न.दिल्ली-16	112-118
14.	वास्तुशास्त्र में भूपरिग्रह विचार	**डॉ. रश्मि चतुर्वेदी** सहाचार्या (ज्योतिष विभाग) श्री ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठ, न.दिल्ली-16	119-131
15.	शिल्पाशास्त्र में रसानुप्रयोग	**डॉ. मोहिनी अरोड़ा** सहायक-आचार्या, साहित्यविभाग राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल	132-137
16.	लक्ष्मीनारायण मन्दिर दिल्ली का वास्तुशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन	**डॉ.देशबन्धु** सहायक-आचार्य, वास्तुशास्त्रविभाग, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ,नई दिल्ली-16 **प्रिया कौशिक** शोध-छात्रा, वास्तुशास्त्रविभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,नई दिल्ली-16	138-154
17.	देवालय और उनके शिखर विधान	**डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'** वास्तुशास्त्रविद, विश्वाधारम्, 40 राजश्री कॉलोनी विनायक नगर उदयपुर-313001 राजस्थान	155-166

लक्ष्मीनारायण मन्दिर दिल्ली का वास्तुशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन

डॉ. देशबन्धु
प्रिया कौशिक

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वा प्रवृतयः॥[1]

विश्व की आदितम ज्ञानराशि वेद हैं। वेद से ही विविध प्रकार के ज्ञान तथा विज्ञान की धाराएँ प्रस्फुटित हुई हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद संज्ञक चार वेद और आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद तथा स्थापत्यवेद संज्ञक क्रमशः चार उपवेद हैं। अथर्ववेद के उपवेद के रूप में प्रसिद्ध स्थापत्य वेद ही वास्तुविद्या का मूल माना जाता है। यद्यपि ऋग्वेद में वास्तुविषयक वर्णन अनेकों ऋचाओं में प्राप्त होता है[2] तथापि वास्तुविद्या का मूल उद्गम अथर्ववेद में ही दिखाई देता है। ऋग्वेद में दुर्ग, प्रासाद और भवनों के उल्लेख से तत्कालीन वास्तुकला का ज्ञान प्राप्त होता है। वैदिककालीन दुर्गो, प्रासादों और विशाल भवनों में पाषाणखंडों तथा काष्ठ का प्रयोग अधिक मात्रा में होता था। ऋग्वेद में वर्णन प्राप्त होता है कि मित्र तथा वरुण[3] के पास एक ऐसा प्रासाद था जिसमें एक सहस्र स्तंभ थे।[4] इन सभी भवनों के मूल में वही वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्त थे, जो सिद्धान्त यज्ञवेदी के निर्माण में प्रयुक्त होते थे। आज भी विविध मन्दिरों के निर्माण में इन्हीं वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों का अनुपालन किया जाता है क्योंकि मन्दिरों के निर्माण में वही भावना होती है, जो मूल भावना यज्ञवेदी के निर्माण में थी।

भारत के विविध भू-भागों पर अनेक मन्दिरों का निर्माण हुआ, जिनमें से भारत की राजधानी दिल्ली में विश्व प्रसिद्ध श्रीलक्ष्मीनारायण मंदिर भी है। यह मंदिर प्राचीन भारतीय शिल्प-शास्त्र के विविध सिद्धान्तों के आधार पर उत्तर भारत की वास्तुशैली अर्थात्

---

1. महाभारतम्-शान्तिपर्व-244/55
2. ऋग्वेद १/५४/६
3. ऋग्वेद ७/५/३
4. ऋग्वेद २/४१/५

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2023; 1(49): 16-20
© 2023 NJHSR
www.sanskritarticle.com

विनयकुकरेती
शोधच्छात्रः, वास्तुशास्त्रविभागः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-विश्वविद्यालयः, नवदेहली -१६

शोध निर्देशक
डॉ. देशबन्धुः
सहायकाचार्यः,वास्तुशास्त्रविभागः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-विश्वविद्यालयः, नवदेहली -१६

Correspondence:
विनयकुकरेती
शोधच्छात्रः, वास्तुशास्त्रविभागः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-विश्वविद्यालयः, नवदेहली -१६

।।बहुतलीयावासीयभवने जलव्यवस्था।।

विनयकुकरेती, डॉ. देशबन्धुः

भारतीयदर्शनानुरूपं समस्तस्यापि जगतः समुत्पत्तिः पञ्चमहाभूतेभ्योऽजायत। पञ्चमहाभूतेषु परिगणितानि तत्वानि पृथ्वीजलतेजोवाम्वाकाशाख्यानि। पञ्चमहाभूतेषुः कारणेन जलं द्वितीयं स्थानं धत्ते। जलशब्दे वर्णद्वयं विद्यते ज एवं च ल। जलवर्णस्यार्थो विद्यते जायते तथैव लवर्णस्यार्थो विद्यते लीयते आहत्य जलशब्दस्यार्थो भवति यतो जगदुदेति यत्र च समाप्तिं गच्छति। सम्पूर्णमपि जगत् प्रायेण जलेनव्याप्तं वर्तते। वैज्ञानिकानां मतं वर्तते जलं इन्धनयोगो (गैसीययोग) वर्तते। आशयो वर्तते ओक्सीजनस्य भागद्वयं हाइड्रोजनस्य भागैकं समाकृत्य जलस्योत्पत्तिरजायतेति । पञ्चमहाभूतानां गुणेषु पञ्चसु पञ्चैव गुणाः पृथ्व्यां, चत्वारो गुणाः जले, गुणत्रयैमग्नौ, गुणद्वयमनिले, एको गुणश्चाकाशे विद्यते।

पञ्चमहाभूतानि	सामन्यगुणाः	विशेषगुणः
पृथ्वी	शब्दः, स्पर्शः, रूपः, रसः, गन्ध :	गन्ध :
जलम्	शब्दः, स्पर्शः, रूपः, रसः	रसः
तेजः	शब्दः, स्पर्शः, रूपः	रूपः
वायुः	शब्दः, स्पर्शः	स्पर्शः
आकाशः	शब्दः	शब्दः

सलिलोद्यान युक्तेषु कृतेष्वकृतकेषु च।
स्थानेष्वेषु सान्निध्यमुपगच्छन्ति देवता।।[1]

वास्तुशास्त्रे जलस्य प्राधान्यं विद्यते। बृहत्संहितानुरूपं प्रासादलक्षणाध्याये स्पष्टीकृतं वर्तते यत् देवतयस्यनिर्माणं नदीतटे सुन्दरे स्थाने रमणीये वातावरणे च स्यात्।

वनोपान्तनदीशैलनिर्झारोपान्तभूमिषु।
रमन्ते देवता नित्यं पुरेषूद्यानवस्तु च।।[2]

वनस्य, नद्याः, पर्वतानां, निर्झराणां समीपेऽथ च उद्यानादिभिः समस्तेषु नगरेषु यत्र प्राकृतिकः कृत्रिमो वा जलाशयः फलानां वाटिका, पुष्पोधानं वा स्यात्तदा देवाः निवसन्ति। यथा जगति पञ्चतत्वानां यथाक्रमं यथायथं सम्मिश्रणं वर्तते तथैव वास्तुशास्त्रेपि भवनादीनां निर्माणे पञ्चमहाभूतानां सन्तुलनेन मानवः यथायोग्यं सुखं सुरक्षां च प्राप्नोति इति वर्णितम् अस्ति। भवननिर्माणायादौ प्रथमतः भूवः चयनं क्रियते तथास्यां भुवि जलस्य विचारः क्रियते आशयो भवति जलवत्यामेव भुवि भवननिर्माणं प्रशस्यते।

अनुषरा स्निग्धवती प्रशस्ता च बहूदका ।
तृणापलान्विता या सा मान्या वास्तुविधौ धरा ।।[3]

सम्पूर्णेऽपि भूमण्डलेऽस्मिन् नगरमहानगरग्रामादीनां योजनं तत्र भवति यत्र नद्यः जलाशयः, वाणी, कूपः, तत्रणाः, सिन्धुः विद्यमानाः स्युः। जलस्योपयोगितां महत्त्वं वा सम्यवधीर्ये जलभण्डारणस्य व्यवस्थाया विषये वास्तुशास्त्रे उल्लेखः प्राप्यते। वास्तुशास्त्रानुरूपं ग्रामस्य नगरस्य मध्ये बहिर्वा दशप्रकारकाः कूपाः, चतुः प्रकारिका वाप्यः, चतुः प्रकारकाणि जलकुण्डानि, षट्प्रकारका तडागाः पुष्पवृद्ध्यै भवन्ति।

कूपाः श्रीमुखवैजयौ च तदनु प्रान्तस्तया दुन्दुभिः
तस्मादेव मनोरश्च परतः प्रोक्तस्तु चूडामणि ।
दिग्भद्रो जयनन्दशङ्करमतो वेदादिहस्तैर्मिता
विश्वान्तौः क्रमवर्द्धितैश्च कथिता वेदादधः कूपिका।।[4]

कूपः-

श्रीमुखम्, विजयः, प्रान्तः, दुन्दुभिः, मनोहरः, चूडामणिः, दिग्भद्रः, जयः, नन्दः, शङ्करः एवम्प्रकारेण दशप्रकारकाणां कूपानां चर्चा विद्यते। एतेषु श्रीमुखस्य आदिमस्य प्रमाणं चतुर्हस्तात्मकं भवति। एवमेव शेषाणां प्रमाणमेकहस्तवृद्ध्या यथाक्रमं ज्ञातुं शक्यते। चतुर्हस्तात् न्यूनप्रमाणवतः कूपस्य कूपिकेति संज्ञा भवति।

वापी -

चतुः प्रकारिकाणां वापीनां निर्माणं प्रशस्तं विद्यते। एकं मुखं त्रिकूरं वा यस्या वाच्याः स्यात्सा नन्दा, द्विमुखं षट्कूटं च यस्या वाच्या स्थात्सा वापी भद्रा, चतुर्मुखं अष्टकूटं च यस्या वाच्याः स्यात्मा वापी विजया, निगद्यते। कूटशब्दस्यार्थो भवति यस्यां वाच्यामुवरितः स्तम्भस्य शिखरस्य वा निर्माणं भवति।

वापी ना नन्दैकमुखी त्रिकूटा षटकूटिका युग्म मुखा च भद्रा।
जया त्रिवस्त्रा नवकूटयुक्ता त्वर्केस्तु कूटैर्विजया मता सा ।।[5]

सरोवरः-

वास्तुशास्त्रे सरोवरस्य चत्वारो भेदा निर्दिष्टाः सन्ति अर्धचन्द्रकः, हासरः, वृत्तसरः, चतुषकोणः भेदात्। एते चत्वारः प्रकाराः त्रिविधासु विभक्ताः सन्ति ज्येष्ठ-मध्यम-कनिष्ठाः एकहस्तपरिमितः सरोवरः ज्येष्ठः, पञ्चशत हस्तपरिमितः सरोवरः मध्यमः, सार्धद्विशतहस्तपरिमितः सरोवरः कनिष्ठ इति निगद्यते।

सरोऽर्द्धचन्द्रं तु महासरश्च वृत्तं चतुष्कोणमेव भद्रम्।
भद्रैः सुभद्रं परिधैकयुग्मं बकस्थैलकद्वयमेव यस्मिन्।।
ज्येष्ठं मितं दण्डसहस्रकैस्तु मध्यं तदर्धेन ततः कनिष्ठम्।
ज्येष्ठं करैः पंचशतानि दैर्घ्यं तदधर्मध्यं तु पुनः कनिष्ठम्।।[6]

कुण्डः-

कुण्डां निर्माण चतुर्भिः प्रकारैः भवति। ते च भद्रसंज्ञकः, शुभद्रकः, नन्दसंज्ञकः, परिघसंज्ञकः, कुण्डस्य निर्माणमष्टहस्ताद् शतहस्तपरिमितं स्यात्। कुण्डे चत्वारि द्वाराणि तथा मध्ये गवाक्षस्य निर्माणं स्यात् एवञ्च चतसृषु विदिशासु पदृशालाया निर्माणं कर्तव्यम्।[7]

प्राचीनकाले जलस्रोतांसि वाजीकूपतडागसरोवादीनि अभवन्। परमघत्वे युगे जलस्रोतस्सु परिवर्तनमजायत आधुनिके युगे जलभण्डारणं नलिकायां छदिसि, टंकीमाध्यमेन, पृथिव्यागर्ते च भवति। प्रायेण बहुतलीयावासक्षेत्रेषु लघुभवनेषु वा टंकीस्थापनं भवति जलस्रोतासे। येन सरलतया सर्वेपि जलस्यावश्यकतां पूरयेयुः। छदिभि स्थापिते जलभण्डारणस्य प्रयोगो भवति। मोटरमाध्यमेनानि भूमिस्य जलं छदिसि भण्डारण मन्त्रे (टंकी) स्थाप्यते।

अतो वास्तुशास्त्रे कूपादीनां निर्माणस्य यः सिद्धान्तः आचार्यैः, प्रकरीकृतः तदनुरूपमेव आधुनिकानां जलस्रोतसां निर्माणं कर्तव्यम्। वास्तुशास्त्रसम्बद्धानां सिद्धान्तानामुतिक्रमणं न कदापि कार्यम् अस्माभिः यथनाक्यं वास्तुशास्त्रीयसिद्धान्तमनुसृत्यैव जलस्रोतसां व्यवस्थापनं कर्तव्यम्। बृहत्संहितायायुक्तमस्ति भवनस्य मध्ये कूपस्य जलभण्डारणस्य वा निर्माणेन धनहानिर्भवति, ईशानादि-क्रमेण यथाक्रमं पुष्टिवृद्धिः, ऐश्वर्यवृद्धिः, पुत्रनाशः, स्त्रीविनाशः, मृत्युभयम्, सम्पत्तिलाभः शत्रुपीडा, सुखप्राप्तिश्च भवति।

कूपे वास्त्रोर्मध्यदेशेऽर्यनाशस्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्यवृद्धि ।
सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च सम्पत्पीडाशत्रुतः स्याच्च सौख्यम्।।[8]

वा॰ **ई**

शत्रुपीडा	**सुखप्राप्तिः**	**पुष्टिकरः**
सम्पत्तिप्रदः	**धनहानिः**	**ऐश्वर्यवृद्धिः**
मृत्युभयम्	**स्त्रीविनाशः**	**पुत्रनाशः**

नै **आ.**

ऐश्वर्य पुत्रहानिश्च स्त्रीनाशो निधनं भवेत् ,
संपच्छ्युभयं सौख्यं पुष्टि प्रागादित क्रमात्।
कूपे कृते मध्यमे तु धनहानिश्च वास्तुनः ,,
तस्मात्-सम्यक् विचार्यैवं कूपं कुर्याच्चबुद्धिमान।।[9]

पूर्वोक्तैः सिद्धान्तैः सिद्धिभवति विषयोऽयं यत् जलस्रोतसे ईशान-पूर्व-पश्चिम-उत्तरोश्च दिशः शुभा भवन्ति। यतो हि पूर्वा दिक् जलस्रोतसे उपयुक्तं तथापि केषुचित् स्थानेषु पूर्वा दिक् जलस्रोतसो अशुभा निगद्यते। **प्राच्यादिस्थे सलिले सुतहानि।**[10] इत्येवम्प्रकारेण ईशानकोणे उत्तरस्यां च दिशि जलस्रोतसो निर्माणं प्रशस्तं विद्यते। इति विरोधाभासो वर्तते यस्य समाधानं शास्त्रीयनियमैः सम्भवति।

वास्तुशास्त्रीयं सर्वसम्मतं मतं वर्तते भवनस्य पूर्वा दिक् उत्तरा च दिक् नम्रा भाररहिता च भवेत्। अतः पूर्वोक्तनियमनुसृत्य वक्तुं शक्यते पश्चिमादिक् तथा च दक्षिणा दिक् उभे दिशौ उन्नते स्यातां भारवत्यौ स्यातामनेन प्रकारेण पूर्वस्यां दिशि जलस्रोतः प्रशस्यते पश्चिमा दिग्वरुणस्य स्वीक्रियते अतः पश्चिमस्यां दिशि जलस्रोतः प्रशस्यते। निष्कर्षतः पूर्व-पश्चिम-उत्तर-ईशानमतिरिच्य अन्यासु दिक्षु विदिशाभु वा जलस्रोतसां निर्माणं वास्तुविसद्धं वर्तते।

सिद्धान्तोऽयं कूपतडागसरोवरादिभिः सम्बद्धो वर्तते जलस्रोतोभिः अतः सिद्धान्तोऽयं सर्वविधभवनानां कृते प्रशस्तो विद्यतेऽथ शुभ फलाधायको विद्यते। बहुतलीयावाससन्दर्भे नियमेष्वेतेषु परिवर्तनमत्यावश्यकं भवति। प्रायः अद्यत्वे भवनेषु छदिसि जलभण्डारपात्रमुपस्थाप्यते यस्य पात्रस्य उपयोगः जलसंरक्षणाय एकत्रीकरणाय भवति। अनेनैव पात्रस्थेन जलेन वस्त्राणां प्रक्षालनं, स्नानम्, शौचं, पाकादिकं सम्पादयामः। भूमौ गर्तं विधाय शौचस्य (जलस्य) सङ्ग्रहणं क्रियते। सत्यामेतादृश्यां स्थितौ शौचनिमित्तं पानाय च यज्जलं तद् द्विविधमपि भूमिगतं न युक्तियुक्तं वर्तते। भूमिगतजलस्य स्थानं पूर्व-ईशान-उत्तरस्यां दिशि उचितमिति। अथ च जलभण्डारणपात्रस्य उपस्थापनं यदि क्रियते तदा छदिसि पश्चिमस्या दिशः दक्षिणस्या वा दिश उपयोगो भवेत्। ईशानकोणे देवतायाः वासस्थानं स्वीक्रियते अतः मलसङ्ग्रहालयः ऐशान्यां न स्यात् दिशा इयम् विचारः कर्तव्यो भवति। बहुतलीया सभवनेषु जलभण्डारणस्य अथ च भवनस्यान्तरिकव्यवस्थायाः प्रयोगः यत्र यत्र स्थानेषु क्रियते तत्र पाकगृहै, स्नानागारे, शौचालये, मलसङ्ग्राहलये, मलजलप्रवाहेषु वा विषयोऽयमवश्यतया ध्येयो भवति।

पाकशाला -

पाकशालायां प्रतिपदं जलस्यावश्यकता भवति। पाकशालायां यथावश्यकं जलस्य प्राप्तिः जलभण्डारकस्थानऽथवा पाइपलाइन अथ च यथाशक्यं पात्रप्रक्षालनय स्थानं उत्तरस्यां दिशि ईशानकोणे पूर्वेशानयोः च भवेत् यदि पाकशालायां जलभण्डारण पात्रस्य स्थापनं कर्तव्यम् अथवा पेयस्य जलस्य कृते यन्त्रस्थापनं (आर.ओ) कर्तव्यं तदा पश्चिमस्यां दिशि कर्तव्यम्। आधुनिकपरिप्रेक्ष्ये पश्चिमस्यां दिशि, उत्तरस्यां दिशि, ईशानकोणे पूर्वस्यां दिशि पाकशालायां जलापूत्यै स्थानं निर्णीतव्यं भवति। यत इमा दिशः वास्तुशास्त्रसम्मता फलदाश्च भवन्ति। आग्नेय्यां च महानसम्।[11]

स्नानागारः -

आधुनिके युगे स्नानागारस्य शौचालयस्य च स्थानम् एकत्रैव भवति। यदि पार्थक्येन स्नानागारस्य निर्माणं कर्तव्यत्तदा पूर्वा एव दिक् शुभा भवति। वास्तुसम्मतेषु भवनेषु स्नानगृहस्य निर्माणं शारिरिक शुद्धयै एव न अपि तु मानसिकशुद्ध्यै अपि कर्तव्यं भवति यतः मनसः प्राबल्येन अभीष्टसिद्धिः सम्भवति। प्रातः काले दिनकरस्य रश्मिभिः पवित्रितायां दिशि यदि स्नानगरस्य निर्माणं स्यात् तदा विषाणूनां नाशपूर्वकं शारीरिकमानसिकरोग्यता सिद्धिः स्यात्। आरोग्यं भास्करादिच्छेत्। (बृहद्वास्तुमाला पृ. 30 श्लोक. 150)

स्नानस्य पाकशयनास्त्र भुजेश्च धान्य
भाण्डारदैवतागृहाणि च पूर्वतः स्युः।
तन्मध्योयतोऽय मधनाज्यपुरीषविद्या-
भ्यासाख्यरोदनरतौषसर्वधाम्।।[12]

अतः स्नानागारे शाबरादीनां कृते पूर्वादिगृ पश्चिमादिग्, उत्तरा च दिक् प्रशस्यन्ते। ईशानकोणमपहाय यतः ईशानकोणः देवानां कृते प्रशस्तः।

शौचस्थानम् -

मलत्यागाय नैर्ऋत्यदक्षिणयोर्मध्ये स्थानं प्रशस्तं विद्यते। **यमराक्षयोर्मध्ये पुरीषत्यागमन्दिरम्।**[13] शौचस्थानस्य निर्माणं यदि दक्षिण नैर्ऋत्ययोः मध्ये भवेत्तदा पश्चिमा दिक् जलस्योपयोगाय प्रशस्यते।

अथ च हस्तप्रक्षालणाय स्थानं पूर्वस्यां दिशि उत्तरस्यां दिशि भित्तौ भवेत्।

मलसङ्ग्रहालयः -

अद्यत्वे नगरादिषु सीवरलाइन इत्यस्योपयोगो भवति। अस्य उपयोगश्च मलादीनां प्रसाय भवति। सीवरलाइन इत्यस्य उपयोगो न भवति तत्र गृहे भवने वा भूतले गर्तं विधाय मलसङ्ग्रहालयो निर्मीयते। अतः जलयुक्तं स्थानं मलसङ्ग्रहालयस्य कृते उपयुक्तं भवति। ईशानकोणमपहाय ईशानस्य समीपे स्थाने पूर्वेशानयोः उत्तरेशानयोः त्यगो भवेदिति। ईशानकोणः देवस्थानं वर्तते अतः ईशानकोणे मलजलं न भवेदिति ध्येयम्। मलसङ्ग्रहालयः गृहस्य मूलादपि दूरे भवेत् यतः जलसङ्ग्रहणे समस्या अपतति अथ च जलं भवनस्य भित्तिषु आगच्छति। अनेन भवनस्य दृढतायां प्रभावो भवति।

मलजलप्रसारणस्थानम् (नालियाँ) -

भवनेषु जलस्योपयोगं कृत्वा मलजलनिः सरणाय अस्य निर्माणं कर्तव्यं भवति। वास्तुशास्त्रे पश्चिमा दिग् दक्षिणा च दिग् उक्त्वा तथा पूर्वोत्तरयोः दिशोः भूमिः अवनता भवेत्। जलस्य प्रवाहः अवनतां भूमिम् अधि भवति। अतः सामान्येन जलप्रमाणाय वायव्योत्तर पूर्वासां दिशां ग्रहणं कर्तव्यम्।

पूर्वे वहति शुभं किंचिदग्नि कोणे धनक्षयम्,
दक्षिणे प्राण सन्देहो नैर्ऋत्ये प्राणाघातकः।
पश्चिमे पुत्रनाशाय वायव्ये सुखमेव च,
उत्तरे राजसम्मानं ईशाने सुखसम्पदः।।[14]

इत्येवम्प्रकारेण बहुत्वलीयावासभवनानां दृष्ट्या जलव्यवस्थाया वास्तुसम्मतं वर्णनं वर्तते। आधुनिके युगे यथायथं वास्तुसम्मतानां नियमानाम् अनुसरणं दौष्कर्यं वर्तते तथापि वास्तुशास्त्रसम्मतानां सिद्धान्तानां प्राकृतिक् शक्तीनां पञ्चमहाभूतानां पारस्परिकसंयोजनेन मानवः यथायोग्यं वातावरणं निर्मीय आत्मनः समृद्ध्यै आरोग्यतायै च चिन्तयितुं शक्नोति।

आधुनिक जलसंक्षणम् (वाटर हार्वेस्टिंग)-

मानवजीवने द्वयोः पदार्थयोः प्राधान्यं वर्तते जलस्य च वायोः। जीवनयापनाय प्रथमतः वायोरावश्यकता भवति तदनु जलस्यनिवार्यत भवति। द्वयोरभावे मानवजीवनमसम्भवं वर्तते। अद्यत्वे समग्रेऽपि विश्वस्मिन् विश्वे जलः भावस्य स्थितिः दृग्गोचरी

वर्तते। सत्यामेतादृश्यां स्थितौ जलसंरक्षणम् अत्यन्तमपेक्ष्यते। एतदर्थं च जलसंरक्षणाय वाटरहार्वेस्टिंग इत्यस्य उपस्थापनं क्रियते-स्माभिः साकमेव मलजलशुद्धिकरणयन्त्राणि अपि उपयुज्यन्ते। महानगरेषु जलाभावं मनसि निधाय मलजलशुद्धी-करणयन्त्रं तथा वाटर हार्वेस्टिंग यन्त्रं जलसंरक्षणाय उपयुज्यन्ते। मलजलशुद्धी-करणमन्त्रेण जलं शुद्धीकृत्य पुनः प्रयोगाय सज्जीक्रियते। एवम्प्रकारेण वृष्टिजलस्योपयोगं कर्तुं शक्नुमः।[15]

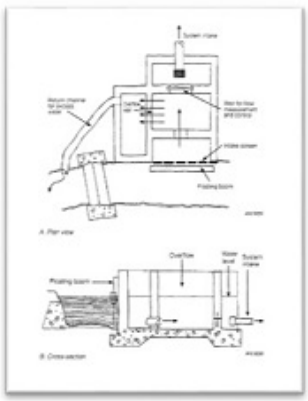

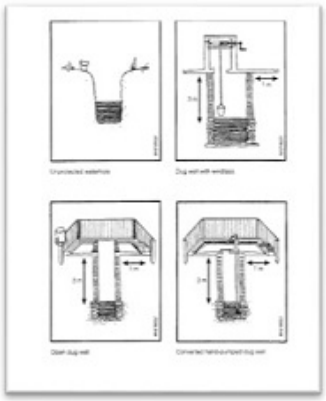

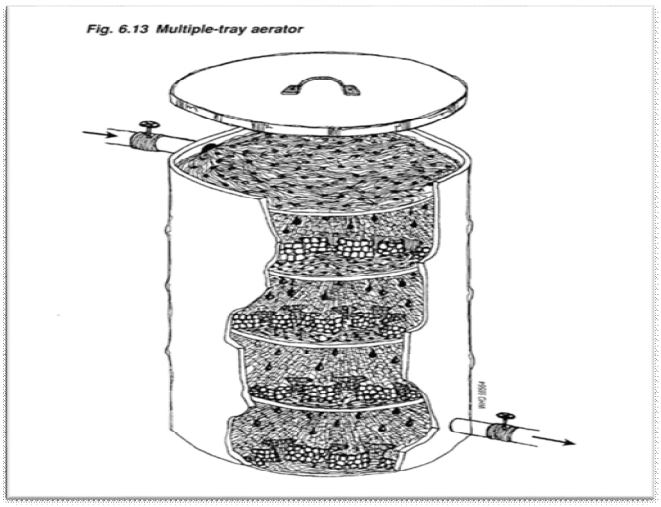

1.तलजलसङ्ग्रहप्रविधिः। (Surface water collection system)

2. छदिसि प्रयुज्ज्ञानः प्रविधिः । (Rooftop system)

3. जलावरोधः । (Dams)

4. भूतलपात्रम् । (Underground tanks)

5. जलाशयः । (Water collection reservoirs)

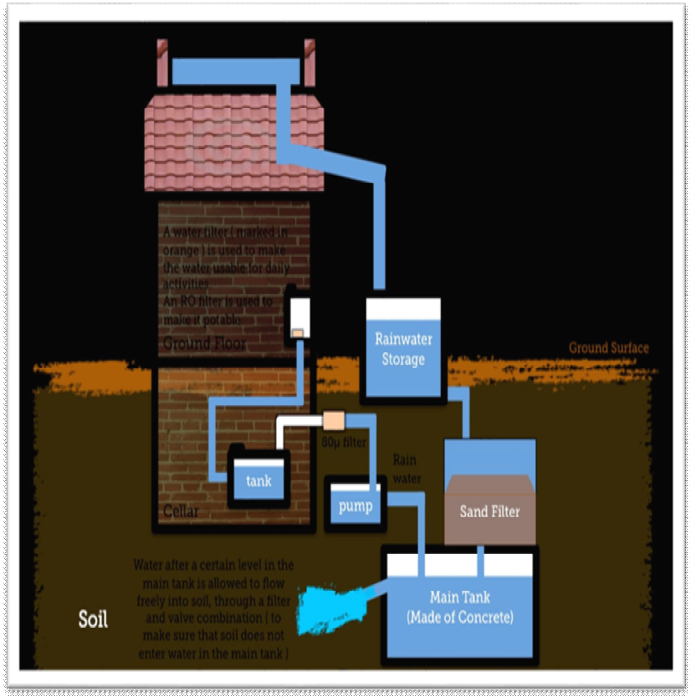

पूर्वोक्तमाध्यमैः वृष्टिजलस्य सङ्गहणं कृत्व पुनः प्रयोगे आनेतुं शक्यते। एवंरीतिः प्रायेण सकलेषु देर्शषु प्रवर्धमानां वरीवृत्यते। परमयं विधिः अधुना प्राचीनो निगद्यते। बहुतलीयावाससन्दर्भे विविधमहानगराणां हाउसिंगसोसाइटी इत्येतेषु क्षेत्रेषु मलजल-शुद्धीकरणयन्त्रप्रयोगेण मलजलप्रवाहकृतेषु क्षेत्रेषु व्याप्तं जलं शुद्धीकृत्य पुनः प्रयोगाय आनीयते। एतदर्थं च सर्वकारोऽपि अहर्निशं प्रयत्ने दत्तचित्रो वर्तते। सर्वकार जलसंरक्षणाय विविधाः प्रयोग-शालाः निर्माति अथ च अस्मिन् क्षेत्रे कार्याणि अपि जायमानानि वर्तन्ते।

बहुतलीयावासभवनेषु गर्तानामुपयोगः अधिकमात्रायां क्रियते। येषु दृष्ट्या जलम् आगत्य सुरक्षितं भवति। वृष्ट्या यावज्जलं वर्तते तावत् अनेन प्रविधिना सुरक्षितं भवति। गर्तमाध्यमेन जलं भूमौ गच्छति ततः पश्चात्तदेव जलप्रयोगे आनीयते। जलसंरक्षणाय कूपानां

निर्माणमपि अभवत् अधुना क्रियतेऽपि। यदि नैसर्गिकपस्य कृते स्थानं न स्यात्तदा कृत्रिमकूपस्य प्रयोगेणापि जलस्य सङ्ग्रहः क्रियते। तथा सद्य इदं जलं प्रयोगे आनीयते। यतः भूमिगतं जलं पुष्टीकर्तुं पुनः प्रयोगे आनेतुं च शक्नुयाम। शुष्कगर्तमाध्यमेनापि जलसङ्ग्रहः क्रियते। रेतसां साहाय्येन शुष्कगर्तनिर्माणेन तत्र जलसङ्ग्रहः कर्तुं शक्यते। इदं जलं गृहस्य उच्छिष्टं जलं संमिश्य जलस्य पुनः प्रयोगः कर्तुं शक्यते। जलस्य गुणवत्तायां विश्व स्वास्थ्य संगठनम् (WHO) विश्वस्वास्थ संस्था नियमाः प्रस्तावितः।

1. जलं स्वच्छं स्यात् ।
2. जलमशुद्धं मलीनं वा न स्यात् ।
3. जलमस्वादु दुर्गन्धं च न स्यात् ।
4. जले लावण्यं (खरापन) न स्यात् ।
5. जले क्लोराइड, आयरन, मैगनीच, नाइट्रेट, आर्गेनिक यथायोग्यं मात्रायां स्युः।
6. जले ई-कोली टी.सी.बी इत्यादयः विषाणवो न स्युः यदि स्युस्तथापि यथोचितं मात्रायाम्। अद्यत्वे उपर्युक्तविधिभिः वृष्ट्या जलस्य संरक्षणं वाटरहार्वेस्टिंग माध्यमेन भवति। यदि आधुनिकवैज्ञानिकोऽथ प्राविधिकः वास्तुशास्त्रस्य सिद्धानानुरूपं वृष्ट्या जलस्य संरक्षणं कुर्यात् तदा सफलतायाः मात्रायां वृद्धिः भवितुमर्हति। प्राकृतिकोर्जसां तथा वास्तुशास्त्रस्य नियमानां सिद्धान्तानां पालनं स्याद्यथा वास्तुविद्भिः आचार्य्यैः निर्दिष्टम्। जलं पञ्चमहाभूतेषु प्रमुखं तत्त्वं विद्यते। पञ्चमहाभूतेभ्यो निर्मितानां भवनानामावासनिमित्तीभूतानां व्यापारनिमित्तीभूतानां धार्मिक-कृत्यनिमित्तीभूतानां अत्यन्तं चारूतया निर्देशो वास्तुशास्त्रविद्भिः वास्तुशास्त्रीयग्रन्थेषु कृतो वर्तते अतोऽत्र सामाजिकोन्नतिं लाभं च मनसि निधाय वास्तुशास्त्रानुरूपं नियमानाम् अनुसरणपुरस्सरं भवनादीनां निर्माणं कर्तव्यम् ।

एवं प्रकारेण प्राचीनार्वाचीनोभयदृष्ट्या बहुतलीयावासीयभवनेषु जलव्यवस्थायाः ज्ञानं भावितुं शक्यते ।

संदर्भग्रन्थ सूची

बृहद्वास्तुमाला : श्री रामनिरोह द्विवेदी एवं डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, संस्करण-२०१२

भारतीय वस्तुशास्त्र का इतिहास : डॉ. विद्याधर, ईस्टर्न बुक लिंकर्स डेल्ली, संस्करण-२०१०

वास्तुसारः : डॉ. देवी प्रसाद त्रिपाठी, ईस्टर्न बुक लिंकर्स डेल्ली, संस्करण-२०१६

वास्तुशास्त्रविमर्श : डॉ. चंद्रमोहन झा, चौखम्बा विद्याभवन प्रकाशन वाराणसी, संस्करण-२००७

वास्तुप्रबोधिनी : डॉ. विनोद शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, संस्करण-२०११

भारतीय वास्तुशास्त्र : प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी, श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि. दिल्ली, संस्करण-२००४

गृह वास्तुशास्त्र विधान : डॉ. देशबन्धु शास्त्री, विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली, संस्करण- २०१३

रहस्यावरण से मुक्ति वास्तु : अश्विनी कुमार, एल्फ़ा पब्लिकेशन दिल्ली, संस्करण-२०१४

वास्तुशास्त्रविमर्श : शोधपत्रिका दशम पुष्प, श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि. दिल्ली, संस्करण-२००१७

वास्तुशास्त्रविमर्श : शोधपत्रिका द्वादश पुष्प, श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि. दिल्ली, संस्करण-२००१९

सन्दर्भ ग्रन्थः

[1] बृहद् संहिता, प्रसादलक्षण, श्लो॰-३

[2] बृहद् संहिता, प्रसादलक्षण, श्लो॰-८

[3] बृहद्वास्तुमाला, अ॰-१, स्लो॰-७७

[4] राजवल्लभमण्डलम्, अ॰-१,श्लो॰-२७

[5] राजवल्लभमण्डलम्, अ॰-१,श्लो॰-२८

[6] राजवल्लभमण्डलम्, अ॰-४,श्लो॰-२७-३०

[7] राजवल्लभमण्डलम्, अ॰-४,श्लो॰-३१-३२

[8] बृहद् संहिता, दकार्गलाध्याय, श्लो॰-११५

[9] बृहद् संहिता, दकार्गलाध्याय, श्लो॰- ११६

[10] बृहद् संहिता, वास्तुविद्याध्याय, श्लो॰-११९

[11] बृह॰वास्तुमाला, पृ॰-३०, श्लो॰-१५०

[12] मुहूर्त चिंतामणि, अ॰-१२, श्लो॰- २०

[13] बृहद्वास्तुमाला,पृ॰-३०, श्लो॰-१५३

[14] बृहद् दैवज्ञरंजन,श्लो॰-४१०-४१७

[15] Ihindi.rainwaterharvesting,com

UGC - CARE LISTED

ISSN-2321-7626
Vol. XXXIII, Year X
अगस्त-अक्टूबर, 2022

पाणिनीया
PĀṆINĪYĀ

वैमासिक - सान्दर्भिक - पुनरीक्षितशोधपत्रिका
(Quarterly Refereed and Reviewed Research Journal)

महर्षिपाणिनिसंस्कृत-एवं-वैदिकविश्वविद्यालयः, उज्जयिनी (म.प्र.)

UGC - CARE Listed

Vol. XXXIII, Year X
ISSN-2321-7626
अगस्त-अक्टूबर, 2022

पाणिनीया
PĀṆINĪYĀ
वैमासिक-सान्दर्भिक-पुनरीक्षितशोधपत्रिका
(Quarterly Refereed and Reviewed Research Journal)

महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालयः
देवासमार्गः, उज्जयिनी, मध्यप्रदेशः, भारतम्
अणुसङ्केतः (E-mail) - mpsvv.paniniya@gmail.com
अन्तर्जालपुटम् (Website) - www.mpsvv.ac.in

प्रधानसम्पादकः
प्रो. विजयकुमारः सी.जी.
कुलपतिः

प्रबन्धसम्पादकः
डॉ. तुलसीदासपरौहा
सह आचार्यः विभागाध्यक्षश्च
संस्कृतसाहित्यविभागः

सम्पादकः
डॉ. शुभम् शर्मा
सहायकाचार्यः प्र. विभागाध्यक्षश्च
ज्योतिष-एवं-ज्योतिर्विज्ञानविभागः

सहायकसम्पादकाः

डॉ. पूजा उपाध्यायः
सहायकाचार्या
विशिष्टसंस्कृतविभागः

डॉ. अखिलेशकुमारद्विवेदी
सहायकाचार्यः प्र. विभागाध्यक्षश्च
वेद-एवं-व्याकरणविभागः

डॉ. उपेन्द्रभार्गवः
सहायकाचार्यः प्र. विभागाध्यक्षश्च
योगविभागः

डॉ. संकल्पमिश्रः
सहायकाचार्यः
वेद-एवं-व्याकरणविभागः

प्रकाशकः
कुलसचिवः
महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालयः, उज्जयिनी (म.प्र.)

सदस्यताशुल्कम्

वार्षिकम् - 3000/-
मूल्यम् - 725/- डाकव्ययः 50/-

अनुक्रमणिका

शुभकामना संदेश		iii
कुलपतिसन्देशः		v
सम्पादकीयम्		vi
संस्कृत - प्रभागः		
1. दृग्दृश्यविवेकः एकं ससामान्याध्ययनम्	**- डॉ. के. रतीष्**	1
2. वैदिकयुगे सभा समितिश्च	**- डॉ. अविनाशगायेनः**	6
3. वीणापाणिपाटनीप्रणीतायामपराजितेति लघुकथायां प्रतिबिम्बिता नारीसमस्या	**- श्रीशशांकशेखरपात्रः**	12
4. वैदिकार्षस्मृतिवाङ्मयेषु संन्यासाश्रमविमर्शः	**- डॉ. श्रुतिकान्तपाण्डेयः**	19
5. शब्दस्य पृथक् प्रमाणत्वविचारः	**- डॉ. अजीमोन सी.एस.**	25
6. चम्बाजनपदस्य स्थापत्यकलायाः परिचयः	**- सन्तोषकुमारः,** **- डॉ. देशबन्धुः**	30
7. वैदिककालीनऋषिसंस्कृतिः - तस्य च पुनः प्रतिष्ठापनाय वेदाश्रयत्वम्	**- जयश्री पाल**	38
8. अभिनवभारत्याः रीतिशास्त्रसङ्केताः, तन्त्रयुक्तयश्च - समन्वयः, समीक्षा च	**- आर्या ए. वर्मा**	43
9. वेदेषु गृहसज्जाया अवधारणा	**- पंकज सेमल्टी** **- डॉ. अशोक थपलियाल**	49
10. शाब्ददर्शनदृष्ट्या शब्दस्वरूपविमर्शः	**- एकराजपौडेलः**	55

चम्बाजनपदस्य स्थापत्यकलायाः परिचयः

सन्तोषकुमारः*, डॉ. देशबन्धुः**

शोधसारः - हिमाचलप्रदेशान्तर्वर्तिनि चम्बाजनपदस्य स्थापत्यकला विश्वविश्रुता वर्तते। तस्याः स्थापत्यकलायाः विविधैः सन्दर्भैः अत्र परिचयो दत्तः वर्तते।

कुञ्जीशब्दाः : उपत्यका, प्रासादः, कला, स्थापत्यम् ।

हिमाचलप्रदेशस्य चम्बाजनपदः भारतस्येतिहासे प्राचीनतमं पर्वतीयराज्यत्वेन गौरवमाप्नोति। जनपदस्यास्येतिहासः ताम्रपत्रेषु, शिलालेखेषु, वंशावलीनाञ्च माध्यमेन संरक्षितोऽस्ति। रावीनद्याः दक्षिणतटे विस्तृतः सुन्दरः जनपदोऽयं वर्तते। अत्रत्याः केचन महान्तः निर्मातारः आसन् यैः अस्माकं कृते अलङ्कृतमन्दिराणां, भव्यप्रासादानां, सुन्दरभवनानाञ्च निर्माणं कृतम् । येषां विद्यमानता साम्प्रतिके समृद्धधरोहररूपेण वर्तते। जनपदस्य उपत्यका 'कला-उपत्यका' इति नाम्ना प्रसिद्धा वर्तते। स्थलमिदं प्राचीनकालादेव भारतीयकलासंस्कृतेः मुख्यकेन्द्रमस्ति। विश्वे प्रसिद्धं 'चम्बारूमाल' इत्यस्य कला अपि जनपदेऽस्मिन् विलसिति। उपत्यकायां प्राकृतिकसौन्दर्येण सह मानवकल्पनाः आकारिताः सन्ति। हिमाच्छादितैः उत्तुङ्गशिखरैः रक्षितमिदं स्थलं स्वकलापरम्पराः संरक्षति। जनपदस्य नृपाः कलाप्रेमिणः आसन् येषां उदारसंरक्षणे एतावत्यः कलापरम्पराः पुष्पिताः प्रफुल्लिताश्चाभवन् । अत्रत्य ग्राम्यजीवनं, विभिन्नजातीनां पारस्परिकमादान-प्रदानम्, भौगोलिकभिन्नताश्च सुरम्यप्रदेशस्यास्य सांस्कृतिकन्यासोऽस्ति।[1] सर्वेक्षणस्यानुसारमत्र बहूनि प्राचीनमन्दिराणि सन्ति। एतेषु सर्वाधिकमन्दिराणि शिवशक्तेश्च वर्तन्ते। अनेन सहैव भगवतः विष्णोः विभिन्नरूपाणां

*शोधच्छात्रः, वास्तुशास्त्रविभागः, श्रीला.ब.शा.रा.सं.वि.वि., नईदिल्ली
**सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः, श्रीला.ब.शा.रा.सं.वि.वि., नईदिल्ली

ISSN 2456-3420

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

खगोलः
KHAGOLAH

Peer Reviewed Annual Research Journal

Volume : 7-8

2022
2023

Central Sanskrit University
VED VYAS CAMPUS BALAHAR
Himachal Pradesh-177108
csu-balahar.edu.in

ISSN 2456-3420

खगोलः

Vol. 07-08 2022-2023

संरक्षकः

प्रो. श्रीनिवासवरखेडी

कुलपतिः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मदनमोहनपाठकः

निदेशकः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वेदव्यासपरिसरः, बलाहरः (हि. प्र.)

प्रबन्ध सम्पादक मण्डल

डॉ. विजेन्द्रकुमारशर्मा
डॉ. भूपेन्द्रकुमार ओझा
डॉ. राहुलकुमारझाः
डॉ. मनीषकुमारः
डॉ. गोविन्दशुक्लः
डॉ. मनोजश्रीमाल
डॉ. ऋचा विश्वाल
डॉ. यज्ञदत्तः
डॉ. दीपकुमारः
श्री पीयूषकुमारत्रिपाठी

संयोजनम् : IQAC वेदव्यासपरिसरः, बलाहरः (हि. प्र.)

ISSN 2456-3420

विषयसूची (संस्कृतम्)

क्र.सं.	विषयः	शोध-लेखकः	पृष्ठसं.
1.	ग्रहणमुकुरनामकस्य ग्रहणगणितविषयकस्य ग्रन्थस्य देशकालकर्तृनिर्णयपूर्वकं समीक्षणं तद्वैशिष्ट्यानां विवेचनं च	डॉ. रामकृष्णपेजत्तायः	7-16
2.	षड्दर्शनानि तत्र विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तश्च	डॉ. बी. केशवप्रपन्नपाण्डे	17-21
3.	कृष्णमित्रविरचिता प्रकाशितरत्नार्णवाख्यटीकायां वैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्याः मङ्गलाचरणविषयकोऽभिनवो विचारः	राजेशचन्द्रः पोखरिया	22-26
4.	प्रकृतिपुरुषयोः स्वरूपपर्यालोचने आरोपतत्त्वविमर्शः	डॉ. निताई पालः	27-31
5.	पुराणदृष्ट्या मोक्षस्वरूपविमर्शः	सौम्या. के.	32-35
6.	मुग्धबोधस्य अर्थवैशिष्ट्यम्	डॉ. महेन्द्रकुमारः	36-37
7.	अर्थवादवाक्यशेषयोः वैजात्यचिन्तनम्	डॉ. श्रीराम ए. एस.	38-44
8.	वचोविच्छित्तिपदार्थविचारः	मनोरमा	45-47
9.	रीतिसिद्धान्तस्य विकासपरम्परा काव्यात्मत्वञ्च	डॉ. सुधीरकुमारः	48-52
10.	पण्डितदुर्गादत्तशास्त्रिणः कृतयः	डॉ. अरुणदीपः	53-56
11.	प्रारब्धकर्मविचारः	विपिनकुमारः	57-59
12.	प्रवासीकाव्यस्य काव्यतत्त्वसमीक्षा	डॉ. के. वरलक्ष्मी	60-65
13.	प्राचीनभारतीयसंस्कृतव्याकरणपरम्परायां पाणिनीयव्याकरणस्य श्रेष्ठत्वम्	लक्ष्मीकान्त मुम	66-70
14.	नारायणभट्टकृतप्रक्रियासर्वस्वे तद्धितखण्डस्य विशेषता	सोनाली साहा	71-74
15.	व्यासपरम्परा महापुराणानि च	डॉ. ललितकिशोरशर्मा	75-80
16.	उपनिषद्दिशा प्रेतस्य गतिविचारः	डॉ. के. मनोज्ञा	81-83
17.	देवप्रासादनिर्माणाय भूमिचयनविमर्शः	डॉ. देशबन्धुः, भूपेश आनन्दः	84-89
18.	संहितादृशा उत्पातविमर्शः	डॉ. दीपकुमारः	90-97
19.	ज्योतिषशास्त्रे वृष्टिविज्ञानम्	गिरीशकुमारझाः	98-100
20.	ग्रहाणां प्राग्गतित्वम्	विनायकशर्मा	101-10
21.	वैदिकगृह्यसूत्रेषु दार्शनिकतत्त्वचिन्तनम्	अचिन्त्यकुमारपालः	103-10
22.	धातूनामन्तर्गणविभागः तत्र पाठफलञ्च	डॉ. जयदेवदिण्डा	107-11
23.	श्रीविष्णुस्तोत्रेषु ध्वनिः	डॉ. ललितकिशोरशर्मा	114-11
24.	ज्योतिश्शास्त्रस्य क्रमिकविकासविवेचनम्	डा. यज्ञदत्तः	117-11
25.	कक्षाशिक्षणे दृश्यश्रव्यसाधनानामुपयोगः	डॉ. हरि ओम	119-12
26.	धर्मपुरुषार्थे त्रित्रिकोणभावमीमांसा	आनन्दप्रकाशपाठकः	123-12
27.	जीवब्रह्मणोः सम्बन्धः	डॉ. सन्दीप चटर्जी	127-12
28.	महाभारतीयशान्तिपर्वान्तर्गतमोक्षधर्मोपपर्वणि अर्थविचारः	डॉ. योगेश पाण्डेयः	130-13
29.	आधुनिकपरिप्रेक्ष्ये रमलज्योतिषस्य वैशिष्ट्यम्	नरेश शर्मा	133-13
30.	मानमेयोदयोक्तदिशा मीमांसायां जातिस्वरूपविमर्शः	रघु बि राज्	137-13
31.	हिमाचलप्रदेशे ज्योतिषपरम्परा	डॉ. विनोदशर्मा	140-14
32.	वैदिकज्ञानपरम्परायाः सन्दर्भे वेदानां स्वरूपं महत्वं च	डॉ. चन्द्रिका	144-14
33.	भूमिग्रहणे अवधेयाः अंशाः - एकमध्ययनम्	भूमिग्रहणे अवधेयाः अंशाः - एकमध्ययनम्	147-15
34.	ज्योतिषशास्त्रदिशा ग्रहाणां सोपशमनं रोगविमर्शः	डॉ. शैलेशकुमारतिवारी	155-15

खगोलः – 07-08

ISSN 2456-3420

देवप्रासादनिर्माणाय भूमिचयनविमर्शः

डॉ. देशबन्धुः, भूपेश आ
सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रवि
शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभ
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः) नवदेहली-1

वास्तुशास्त्रे देवालयनिर्माणादीनां विस्तृतवर्णनं समुपलभ्यते। देवालयनिर्माणाय सर्वाधिकम् आवश्यकं तत्त्वं प्रासादस्य भूमिचयनम् अतः भूमिचयनस्य विषये वास्तुशास्त्रे अनेकविधसिद्धान्तानां वर्णनं समुपलभ्यते। वास्तुशास्त्रानुसारं भूमेः परीक्षणं भूमेः प्लवन-आकार-व वर्णभेदैः क्रियते।

प्रासादनिर्माणाय सर्वप्रथमं रमणीयस्थानस्य चयनं कार्यम्। प्रासादमण्डनानुसारेण सा भूमिः श्रेष्ठभूमिर्भवति या भूमि मध्यस्थानाद् उन्नता दिक्षु अवनता भवति। क्रमशः पूर्वोत्तरीशानदिक्षु अवनता अथवा पूर्वोत्तरीशानदिक्षु च यस्यां भूमौ प्लवनं यत्र भवति सा भूमिः प्रासादे उत्तमा भवति।

सर्वदिक्षु प्रवाहं वा प्रागुदकशङ्करप्लवाम्।

भुवं परीक्ष्य सिञ्चेत् पञ्चगव्येन कोविदः।।[1]

एवमेव भूमेः प्लवनमाध्यमेनापि शुभाशुभत्वं विचार्यते यदि भूमौ जलस्य प्लवनं सर्वदिक्षु पूर्वोत्तरेशानयाः वा स्यात्तदा सा प्रासादनिर्माणाय शुभङ्करी भवतीति।

प्रासादनिर्माणात् पूर्वं भूमेः परीक्षणम् (भूपरीक्षणं) आवश्यकं भवति। बृहद्वास्तुमालानुसारेण भूमेः वर्णचतुष्टयं भवति। तत्र श्वेतवर्णा ब्राह्मणी, रक्तवर्णा भूमिः क्षत्रिया, हरितवर्णा भूमिः वैश्या, कृष्णवर्णा च शूद्रा इत्यभिधीयते।[2]

ब्राह्मणी भूमिः कुशयुक्ता सुगन्धा च भवति। क्षत्रिया भूमिः शरयुक्ता (मूञ्ज) रक्तगन्धा च भवति। वैश्याभूमिः कुशकाशाकुला मधुरा भवति तथैव शूद्रा भूमिः तृणादियुक्ता मद्यगन्धा च भवति। अर्थाद् ब्राह्मणी मधुरसा, क्षत्रिया कषायरसा, वैश्याम्लरसा, शूद्रा तिक्तरसा च भव

अम्ला भूमिर्भवेद्वैश्या तिक्ता शूद्रा प्रकीर्तिता।

मधुरा ब्राह्मणी भूमिः कषाया क्षत्रिया मता।।[3]

बृहद्वास्तुमालायां भूमेः फलमपि समुपलभ्यते। तत्र ब्राह्मणी भूमिः सुखदा, क्षत्रिया भूमिः राज्यप्रदा, वैश्या भूमिः धनधान्यदा, शूद्रा त्याज्या च भवति।

दानवराजमयानुसारेण देवानां तथा ब्राह्मणानाञ्च कृते चतुरस्त्रायता भूमिः श्रेष्ठा भवति।

देवानां तु द्विजातीनां चतुरस्त्रयताः श्रुताः।[4]

आधुनिककालेऽपि भारतवर्षेऽनेमे देवप्रासादाः आयताकाररूपेण प्राप्यन्ते।

यस्यां भूमौ बीजरोपणात् त्रिपञ्चससरात्रिषु बीजांकुरो भवति सा भूमिः श्रेष्ठा भूमीति कथ्यते। इदमपि विलोक्यते यद् भूमिः ऊर्ध्वाऽधोमुखी, तिर्यग् वा न भवेत्। यस्यां भूमौ गर्ताः न भवेयुः सा भूमिरपि श्रेष्ठा भूमिः भवति। या भूमि ग्रीष्मकाले शीतला शरद्ध भवति, यस्याः ध्वनिः मृदङ्गवल्लकी-वेणुदुन्दुभीनां समा भवति सा भूमिरेव देवालयनिर्माणाय शुभंकरी भवति।

प्लवनवशाद् भूमेः संज्ञा 'वीथी' भवति या भूमिः ईशानकोणे उन्नता नैर्ऋत्यकोणे च निम्ना भवति सा भूतवीथी नाम्ना ज्ञायते। या भूमि उन्नता दक्षिणे चावनता भवति सा यमवीथी नाम्ना ज्ञायते। या भूमिः दक्षिणे उन्नता उत्तरे चावनता भवति सा गजवीथी कथ्यते। या